रामाश्रम सत्संग प्रकाशन

नवनीत

(भाग २)

रामाश्रम सत्संग (रजि०)
सिकन्द्राबाद (यू०पी०)

Scanned by CamScanner

रामाश्रम सत्संग प्रकाशन

नवनीत

(भाग २)

रामाश्रम सत्संग (रजि०)
सिकन्द्राबाद (यू०पी०)

Scanned by CamScanner

प्रकाशक :

आचार्य, रामाश्रम सत्संग, (रजि.)
सिकन्द्राबाद (उ०प्र०)

प्रथम संस्करण २००० (१९८२)

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य ५)

मुद्रक :
विवेक मुद्रणालय,
सराय नजर अली,
गाजियाबाद ।

Scanned by CamScanner

दो शब्द

आधुनिक युग में परमसन्त महात्मा श्रीकृष्णलाल जी महाराज सन्त-मत के महान आचार्य हुए हैं । आजीवन गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए, ख्याति से दूर रह कर और अपने आपको सेवक कहकर आपने संसार के दीन-दुखियों का उद्धार किया । आप अपने आप को इतना छिपाये हुए रहते थे कि निकटतम प्रेमियों को भी यह नहीं मालूम हो पाता था कि मिट्टी की देह में भगवान बैठा है । आज, जब वे शरीर से इस संसार में नही हैं, उनके श्रीमुख से निकलो पवित्र वाणी ही महावत है, जो जिज्ञासुओं का मार्ग प्रदर्शन करती है । उनके अनेकों प्रवचन 'सन्त-वचन' के नाम से अब तक पांच भागों में प्रकाशित हो चुके हैं । भविष्य में उनके प्रवचनों के अन्य संकलन भी प्रकाशित होंगे, ऐसी आशा है ।

आपका मिशन रामाश्रम सत्संग के नाम से विख्यात है जिसका मुख्य केन्द्र सिकन्द्राबाद, जिला बुलन्दशहर, (उत्तर प्रदेश) में है और इसकी शाखायें भारतवर्ष में दूर-दूर तक फैली हुई है ।

जैसे सागर का मंथन करने से उसके तत्व रत्नादिक निकले, जैसे दूध का मंथन करने से उसका तत्व मक्खन (नवनीत) निकलता है वैसे ही आध्यात्म-विद्या के सागर का मंथन करके महात्मा जी ने अपने श्रीमुख से जो उस का जो तत्व प्रस्फुटित किया वह उन्हीं के शब्दों में इस छोटी सी पुस्तिका में दो भागों में देने का प्रयास किया गया है । जो जिज्ञासु अथवा साधक इसको ध्यान से पढ़कर और मनन करके अपने जीवन में व्यवहारिक रूप देंगे उन्हें आशातीत लाभ होगा ।

—दास

करतार सिंह

दिल्ली १५-९-७६—(प्रथम भाग)
दिल्ली ३१-५-८२—(दूसरा भाग)

Scanned by CamScanner

चित्र-सूची

पृष्ठ चित्र -परमसन्त महात्मा श्रीकृष्ण लाल जी महाराज सिकन्द्राबाद (उ०प्र०)

सामने -आचार्य दिगन्त परम सन्त महात्मा रामचन्द्रजी महाराज, फतहगढ़ (उ०प्र०) श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के गुरुदेव।

Scanned by CamScanner

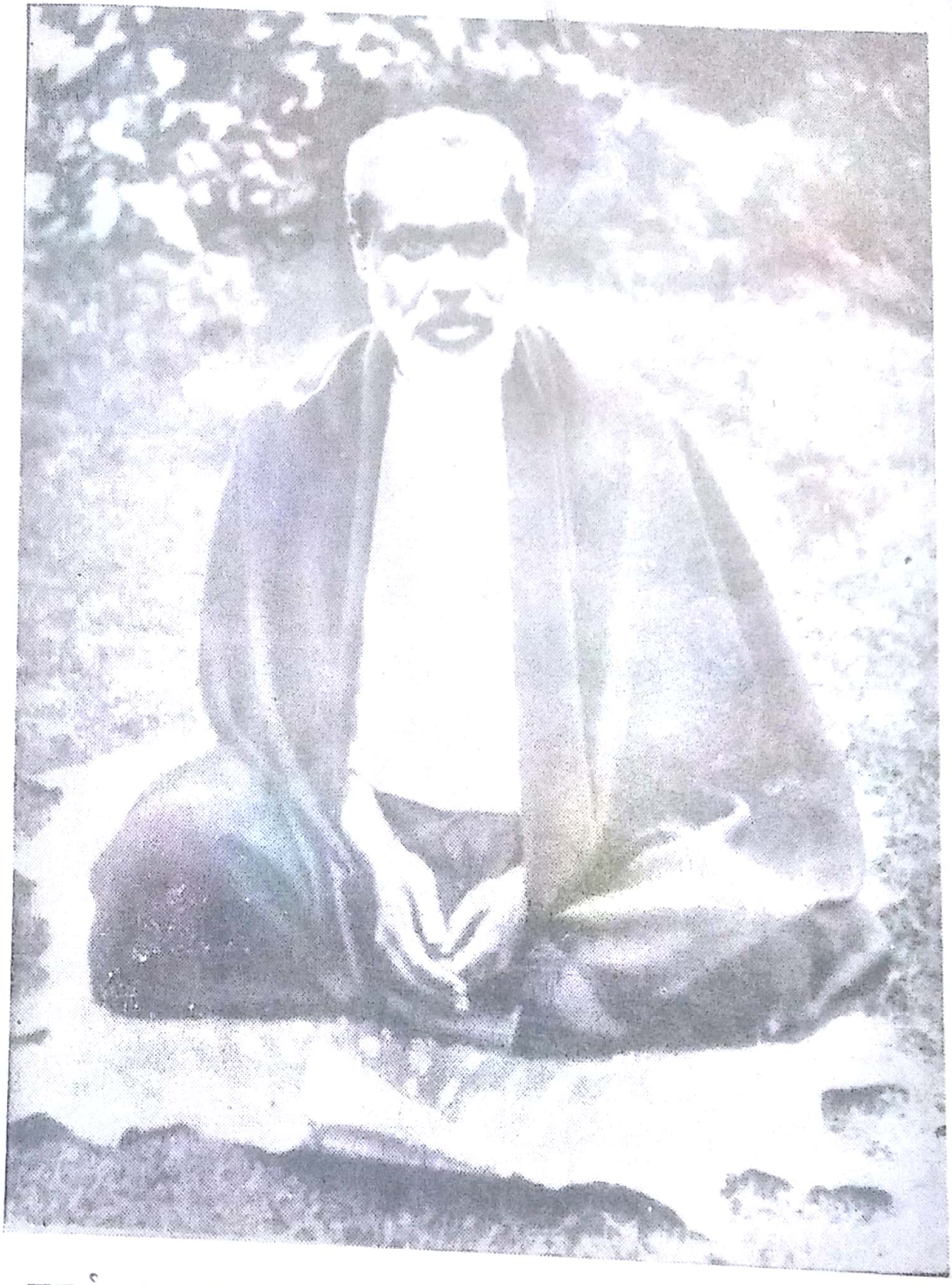

समर्थ गुरु महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (उर्फ लाला जी)
फतहगढ़, उ० प्र० निवासी (जन्म १८७३ —निर्वाण १९३१)

Scanned by CamScanner

एक प्रेम के नाते को छोड़कर मैं और किसी नाते को नहीं जानता। केवल प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम। जो लोग बिना अपने स्वार्थ के मुझे प्रेम करते हैं, चाहे वे सज्जन हैं या दुष्ट, मैं उन्हें प्रेम करता हूँ। वे मेरे हैं और मैं उनका। वे सदैव मुझ पर आश्रित रह सकते हैं और वे देखेंगे कि मैं सदैव उनकी सेवा के लिये प्रस्तुत हूँ। —**(महात्मा श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)**

(जन्म १५-१०-१८९४, निर्वाण १८-५-१९७०)

Scanned by CamScanner

नवनीत

(भाग २)

[१]

सन्तों का सिद्धान्त है—"ईश्वर है और अवश्य है, सृष्टि के नियम अटल हैं, वह सर्व-समर्थ, सर्व-शक्तिमान, सम्पूर्णज्ञान और सत्-चित्-आनन्द है। वह जो कुछ करता है हमारी भलाई के लिये करता है, हमारी शुरुआत् (आदि) और आख़ीर (अन्त) उसी में है, वह सबके अन्तर के अन्तर में बैठा हुआ सबका सच्चा बाप है।" जीव जब तक संसारी वासनाओं में फँसा हुआ है, ऊपर नहीं उठ सकता। जीवों के उद्धार के लिये सन्त-जन यहाँ पधारते हैं और प्रेम के माध्यम से जीवों को समझाते हैं। जो उन पर विश्वास ले आते हैं तथा उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हैं वे अवश्य भवसागर पार कर जाते हैं।

* * *

घर के कामों में कम से कम दख़ल दीजिये। जितना कम दख़ल दोगे उतना ही आराम में रहोगे? आदमी के सुधारे कुछ नहीं सुधरता। यह काम ईश्वर के हाथ में हैं।

* * *

सबसे आसान तरीक़ा उस (परमात्मा) तक पहुँचने का यह है कि बजाय इसके कि यह ख़्याल करो कि वह दूर है, यक़ीन (विश्वास) करो कि वह तुम्हारे नज़दीक (निकट) से भी नज़दीक (निकटतम) है, उसका ध्यान करो? हर समय उसकी याद

Scanned by CamScanner

रखो। सोचो, वह तुम्हारा हमेशा का साथी है और उसी के पास जाकर तुम्हें सच्चा आनन्द मिलेगा। दुनियाँ की यह सब चीजें उसी ने तुम्हें दी हैं और थोड़े दिनों के लिए हैं। उन थोड़े दिनों रहने वाली चीज़ों के लिये अपने असली प्रीतम को मत भूलो। जो चीज़ें उसने दी हैं उन्हें अपनी मत समझो। जब तक वे चीज़ें मौजूद हैं और उसने दे रखी हैं, उनकी सेवा में लगे रहो और जब वह वापिस माँगे, उसे ख़ुशी से वापिस कर दो। इस तरह अपने मन को अन्तर में उससे लगाये चलो। अपनी वृत्तियों को बाहर से हटाकर उसी में लगा दो। हर समय उसका ध्यान करो।

भक्तों की शान ही निराली होती है। वे तैयार बैठे रहते हैं और अपने प्रीतम (परमात्मा) के लिए किसी वक्त भी कुर्बान हो जाते हैं। यही मरने से पहले मरना है। जब सारी इच्छायें खत्म हो जाती हैं तभी इस हालत को पहुँचता है। मीराबाई कहती थीं—"सूली ऊपर सेज पिया की, केहि विधि मिलना होय।" सारी इच्छाओं को मार देना ही सूली चढ़ना है। जो सूली चढ़ जाता है वही पिया को पाता है। यह त्रिकुटी का स्थान है जो दोनों भौंहों के बीच माथे में एक इन्च पीछे है। यहीं पर आत्मा का ठहराव है। इसी को "शिवनेत्र" कहते हैं। यही शिवजी का धनुष है जो रामचन्द्र जी ने तोड़ा था और सीता जी को ब्याहा था। सीता 'शक्ति' का रूप है। हज़रत मौहम्मद सफ़ेद घोड़े पर चढ़कर चाँद पर गये, वह यही 'त्रिकुटी' या 'शिवनेत्र' का स्थान है। इसकी शक्ल अर्धचन्द्राकार होती है। धनुष भी अर्धचन्द्राकार होता है। इस मुक़ाम (चक्र) को पार किये बिना प्रीतम को कोई नहीं पा सकता। ईसा की सलीब यही मुक़ाम है। वे नमूना पेश करते हैं भक्ति का कि प्रीतम पर किस तरह फ़िदा हुआ जाता है। जो (जीते जी) मर जाता है वही असली ज़िन्दगी पाता है? बग़ैर

Scanned by CamScanner

इच्छायें समाप्त किये Kingdom of Heaven (स्वर्ग का राज्य-सन्तों का सत-लोक) नहीं मिलता। अपने सांसारिक जीवन को ऐसा बदलो कि वह ख़ुशी की ज़िन्दगी बन जाय और जब एक बार वह ख़ुशी मिल गई तो हर हालत में ख़ुशी ही ख़ुशी होगी।

✲ ✲ ✲

सच्चे गुरु के मिलने पर उनका बाहरी और आन्तरिक सत्संग करने और उनसे प्रेम करने पर त्याग ख़ुद-ब-ख़ुद हो जाता है। त्याग पर अलहदा ज़ोर देने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने प्रेम को ही मुख्य माना है। यह बिल्कुल ठीक है, पर तजुर्बा यह बतलाता है कि ऐसे अभ्यासी का, जो पूर्ण रूप से अपने गुरु के कहने में हो और उसी का आशिक़ होकर तन-मन-धन सब अर्पण करदे, मिलना बहुत मुश्किल है। हज़ारों अभ्यासियों में से कोई एक-दो निकलते हैं, और अगर ऐसा कोई पूर्ण गुरु है जो ईश्वर रूप है और ऐसा शिष्य जिसने सब तन-मन-धन हमेशा के लिये अपने गुरु पर कुर्बान कर दिया है तो उसको दुनियाँ की वस्तुओं से ख़ुद ही त्याग हो जायेगा और उसका यह प्रेम उसे भव-सागर से पार कर देगा। इसलिये हमारे यहाँ के सत्संगी भाइयों को चाहिये कि प्रेम के साथ-साथ सत्संग और भजन में अपने मन को देखते चलें और जिन-जिन चीज़ों में मन फँसा हुआ है और असली लक्ष्य यानी ईश्वर से दूर ले जाता है उन चीज़ों का त्याग करना चाहिये। यही सच्चा प्रेम है। अगर प्रेम के साथ-साथ मन की वासनाओं का भी त्याग करते रहेंगे तो रास्ता जल्दी कटेगा।

✲ ✲ ✲

जिनकी वृत्ति बाहर की ओर है वे उसे अन्तर्मुखी बनायें। सतगुरु से उसकी युक्ति जानकर आन्तरिक ध्यान करने का अभ्यास करें। ईश्वर सभी जगह मौजूद है। इधर-उधर भटक कर

Scanned by CamScanner

समय नष्ट न करें। उसे अपने अन्तःकरण में देखें और इस काम में ऐसे महापुरुष का सहारा लें जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है। तभी फ़ायदा होगा। बिना गुरु के फ़ायदा नहीं होगा। गुरु की मदद से हम अपनी सुरत (attention) को अन्तःकरण पर केन्द्रित कर सकेंगे। जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए दीप को जला सकता है। इसीलिए सन्तों ने बार-बार कहा है कि बिना आत्मदर्शी (गुरु) का सहारा लिये साधारण जिज्ञासु अपने अन्तः-करण के पर्दों को साफ़ नहीं कर सकता।

* * *

सन्तमत प्रेम का मत है। इसमें प्रेम और विश्वास, दोनों बहुत ज़रूरी हैं। न तो अन्ध-विश्वास की ज़रूरत है और न बुद्धि के तर्क की। जो गुरु बतावें उस पर अमल करना प्रेम और विश्वास है लेकिन समझ कर अमल न करे तो यह समझना नहीं हुआ। समझना बुद्धि का काम है और जो बुद्धि से समझकर चलता है वही 'मज़हब' है।

* * *

लड़का कितना भी नालायक़ हो परन्तु बाप के लिये लड़का ही है। बाप हर समय अपने बेटे की प्रतीक्षा करता रहता है और चाहता है कि गोद में चिपटा ले। और हम हैं कि उसकी याद तक नहीं करते। परमात्मा के पास सारी चीज़ें है—यह सृष्टि उसकी लीला विलास है। उसके पास सिर्फ 'दीनता' नहीं है। तुम दीन बन कर उसके पास जाओ। वह तुम्हें अवश्य अपनी गोद में उठा लेगा। दीन बनने के लिये अपने आपको मेटना पड़ेगा—यह जीवन का सौदा है। इसके लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़े तो हिचको मत। मौक़े को ग़नीमत जानकर मानव-जीवन को सफल करो, वर्ना यह समय फिर हाथ नहीं आयेगा।

Scanned by CamScanner

समय नष्ट न करें। उसे अपने अन्तःकरण में देखें और इस काम में ऐसे महापुरुष का सहारा लें जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है। तभी फ़ायदा होगा। बिना गुरु के फायदा नहीं होगा। गुरु की मदद से हम अपनी सुरत (attention) को अन्तःकरण पर केन्द्रित कर सकेंगे। जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए दीप को जला सकता है। इसीलिए सन्तों ने बार-बार कहा है कि बिना आत्मदर्शी (गुरु) का सहारा लिये साधारण जिज्ञासु अपने अन्तः-करण के पर्दों को साफ़ नहीं कर सकता।

* * *

सन्तमत प्रेम का मत है। इसमें प्रेम और विश्वास, दोनों बहुत ज़रूरी हैं। न तो अन्ध-विश्वास की ज़रूरत है और न बुद्धि के तर्क की। जो गुरु बतावें उस पर अमल करना प्रेम और विश्वास है लेकिन समझ कर अमल न करे तो यह समझना नहीं हुआ। समझना बुद्धि का काम है और जो बुद्धि से समझकर चलता है वही 'मज़हब' है।

* * *

लड़का कितना भी नालायक हो परन्तु बाप के लिये लड़का ही है। बाप हर समय अपने बेटे की प्रतीक्षा करता रहता है और चाहता है कि गोद में चिपटा ले। और हम हैं कि उसकी याद तक नहीं करते। परमात्मा के पास सारी चीज़ें है—यह सृष्टि उसकी लीला विलास है। उसके पास सिर्फ 'दीनता' नहीं है। तुम दीन बन कर उसके पास जाओ। वह तुम्हें अवश्य अपनी गोद में उठा लेगा। दीन बनने के लिये अपने आपको मेटना पड़ेगा—यह जीवन का सौदा है। इसके लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़े तो हिचको मत। मौक़े को ग़नीमत जानकर मानव-जीवन को सफल करो, वर्ना यह समय फिर हाथ नहीं आयेगा।

Scanned by CamScanner

दुःख और मुसीबतें परमात्मा की नियामतें हैं इनके होते परमात्मा की याद खूब आती है।

* * *

जब तक परमात्मा की याद बनी रहे उतनी देर का समय सार्थक, बाक़ी निरर्थक है।

* * *

सब सांसारिक वस्तुओं का जो ज़ाहिरा (दिखावे का) सहारा है, छोड़ कर उसी मालिक का सहारा लो। उसी का असली सहारा है। सब चीज़ों का देने वाला वही है, लेकिन बाहरी रूप दूसरा है जो धोखा है। जितना तुम दिल से उसके समीप होते जाओगे, उतना ही लम्बा चौड़ा रास्ता मिनटों में तय होता जायेगा।

* * *

सन्त की सेवा में जब भी जाओ, साफ दिल से जाओ। जो अन्दर हो, वही बाहर हो—दोहरापन (Hypocricy) न हो। सन्त की सौहबत से इख़लाक़ (आचरण) सुधरता है—(Character formation होता है)। इन्द्रियों, मन और बुद्धि पर क़ाबू (Centrol) होता है। अभी तक ये तुम्हारे ऊपर क़ाबू किये हुए हैं, फिर तुम इनके ऊपर क़ाबू करोगे, इनके मालिक बनोगे। और इस तरह जब आत्मा मन के फन्दे से न्यारी हो जायगी, तब ईश्वर का दर्शन होगा।

* * *

खाना सामने रखा है—अचानक कोई भूखा आ गया। खुद न खाकर उसे दे दो। दखोगे कि खाने में उतना आनन्द नहीं मिलता जितना दे देने में।

Scanned by CamScanner

प्र०—परमात्मा किससे पैदा हुआ ?

उ०—जो चीज़ दो चीज़ों से मिलकर पैदा होती है वह जन्म लेती है और मरती है और तब्दील होती रहती है। लेकिन जो मुफरत यानी एक है, न वह पैदा होती है और न मरती है। दुनियाँ में परमात्मा ही एक ऐसी चीज़ है जो 'एक' है। न कभी पैदा होता है और न मरता है। वह हमेशा से मौजूद है और हमेशा क़ायम रहेगा। उसके लिये यह सवाल पैदा नहीं होता कि वह किससे पैदा हुआ।

*　　*　　*

प्र०—परमात्मा ने दुनियाँ को क्यों पैदा किया ?

उ०—इसको सन्तों ने मुख़्तलिफ़ (भिन्न-भिन्न) तरीक़ों से समझाया है लेकिन वह तसल्लीबख़्श (संतोष जनक) नहीं हैं उसमें कोई न कोई एतराज़ (आपत्ति) निकालता है। एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस से भी यही सवाल किया गया था। इसका जवाब उन्होंने इस प्रकार दिया कि परमात्मा की नज़दीकी हासिल करो, उससे मिलकर एक हो जाओ। तभी इस मज़मून को अच्छी तरह से समझ सकोगे। और बात भी ऐसी ही है। परमात्मा के विषय में बात-चीत सिर्फ आत्मा ही अनुभव करती है। बुद्धि उसको नहीं समझ सकती। दुनियाँदारों की आत्मा के ऊपर इन्द्रिय, मन, बुद्धि के पर्दे पड़े हुये हैं। इसलिये वे परमात्मा के भेद को नहीं समझ सकते जब तक इन परदों को अपने अपर से न हटा दें। पूर्ण रूप से तो उसी वक़्त आपकी समझ में आयगा जब आप इन्द्रिय, मन, व बुद्धि की गुलामी से आज़ाद होंगे लेकिन फिर भी समझाने की ग़रज़ से कुछ न कुछ कहा जाता है। समुद्र अपनी हालत पर क़ायम है। उसमें चाँद, सूरज, हवा के असर से लाखों करोड़ों ही बुलबुले पैदा होते हैं और हज़ारों नज़्ज़ारे (दृष्य) दीखते हैं लेकिन

Scanned by CamScanner

इनके शान्त हो जाने पर न कहीं बुलबुले हैं न कहीं नज्ज़ारे हैं। समुद्र ज्यों का त्यों है। वह हमेशा से क़ायम है, कायम रहेगा। उसमें न कहीं प्रलय है और न उत्पत्ति। जो बुलबुलों पर निगाह रखते हैं वे प्रलय और उत्पत्ति दोनों अनुभव करते हैं। और जो समुद्र पर निगाह रखते हैं उनको ये दोनों चीज़ें वहम दिखाई देती हैं। सिर्फ एक शक्ति काम कर रही है, अपनी ख्वाहिश (इच्छायें) और संस्कारों के वश जीव उसमें मुख्तलिफ (विभिन्न) नज्ज़ारे (दृश्य) देखता है। जब तक संस्कार बाक़ी हैं नज्ज़ारे मौजूद हैं और जब ये ख़त्म हो जाते हैं, नज्ज़ारे भी ग़ायब हो जाते हैं।

* * *

नामी से नाम बड़ा है। जहां उसका नाम लिया और वह तुम्हारे पास है।

"समझो हमें वहीं पर, दिल है जहाँ हमारा।"

* * *

शुद्ध मन से यह मतलब है कि उसको ईश्वर से लगाव हो और तलाश करके उसको सतगुरु मिल गया हो और उससे प्रीति हो गई हो। शुद्ध-बुद्धि से यह मतलब है कि बुद्धि में दुनियाँ की नाशवानता को देखकर सच्चाई यानी हमेशा रहने वाली चीज़ की तलाश हो और दुनियाँ से उपरामता हो गई हो। जब तक यह दोनों चीजें न होंगी, इस दुनियाँ के प्रपंच से छूटना नामुमकिन (असंभव) है।

* * *

तन का सुख, इन्द्रिय-सुख, मन का सुख और बुद्धि का सुख—सबको समता में लाकर इष्ट के अर्पण कर दे, अपने आपको पूर्ण रूप से उसके हवाले कर दे। इसके बाद कुछ करना धरना नहीं रहता। एक दीन भाव ही उसे निकाल ले जायगा।

Scanned by CamScanner

दुनियाँ में हर सख्स अपने ख्याल में शस्त है, कोई रुपये में, कोई स्त्री में, कोई औलाद में और कोई मान बड़ाई में और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देता है। जब तक ख्वाहिश के मुताबिक़ गुरु बातचीत करता है वह उनका सब कुछ है, जब गुरु मन के खिलाफ़ कोई बात कहता है तब वे बदएतकाद (विमुख) हो जाते हैं और गुरु में सौ नुख्स निकाल देते हैं। ऐसे लोगों की सोहबत से बचो।

* * *

सूर्य निकल रहा है। कोई शख्स अपनी आँख पर अँगुली रख लेता है और शोर मचाता है कि अँधेरा है। इसमें सूर्य का क्या कुसूर है। उँगली हटा लो, अँधेरे की शिकायत दूर हो जायगी। गुरु के ख़िलाफ किसी की बात मत सुनो। अगर कोई बात सुनने में आ जाय और वह गुरु के ख़िलाफ हो तो गुरु से साफ़-साफ़ कह दो। वह तुमको असलियत बता देंगे। अगर इस पर भी तुमको तसल्ली न हो तो ऐसे गुरु को छोड़ दो।

* * *

हर मनुष्य जो पैदा हुआ है, ईश्वर के दर्शन पा सकता है। मनुष्य-जन्म और गुरु—दोनों संस्कार-वश मिलते हैं, लेकिन इतने से काम नहीं चलता। मनुष्य चोला मिला और गुरु भी मिले, लेकिन चाल नहीं चलती, तरक्की नहीं मालूम होती। इसका क्या कारण है? अधिकार नहीं बना। जब तक अधिकार नहीं बनेगा, ईश्वर नहीं मिलेगा। अधिकार बनाने के लिये पुरुषार्थ और तप करना पड़ता है। मन को क़ाबू में करो, इधर उधर मत जाने दो।

* * *

गुरु का ध्यान मन में और राम का नाम आत्मा से लेता रहे। राम जो सब में रमा है, उसका चाहे कोई भी नाम ले ला, बात एक ही पर पहुँचती है। ॐ जो चारों जगत का मालिक है,

Scanned by CamScanner

'हरी' जो दुःख का हरने वाला है, 'शिव' जो दुनियाँ का मालिक है—लेकिन यह सब शुरू शुरू में नहीं हो पाता। सब्र करो और बाधाओं से लड़ते चलो।

✲ ✲ ✲

इंसान जो कुछ सोचता है अगर वह ख्याल बराबर क़ायम भी है तो भी बरसों उसको रूप धारण करने में लग जाते हैं और यह तो जब है कि जब वह ख्याल बराबर क़ायम रहे। हम आप गृहस्थ हैं, हज़ारों किस्से लगे हैं जो कि एक ख्याल क़ायम रहने नहीं देते। इसलिए जो हम चाहते हैं वह जल्दी पूरा नहीं होता। लेकिन इससे घबराना नहीं चाहिये। वह शख्स बहुत गनीमत है जो दुनियाँ में अपना फ़र्ज़ पूरा करते हुये दो समय उसका भी नाम ले लेता है।

✲ ✲ ✲

क्या बग़ैर प्रेम के तड़प होती है? क्या बग़ैर आग के तपन होती है? यह रास्ता आहिस्ता चलने का है जिससे दीन और दुनियाँ दोनों बनते हैं। तेज़ी से चलने में रास्ते में रुकावट आ जाती है। मन के घाट को अहिस्ता, अहिस्ता बदलते चलो। परमात्मा मदद करेगा।

✲ ✲ ✲

कर्म तीन चीज़ों की मिली-जुली कार्यवाही से होता है। पहले बुद्धि में विचार आता है, फिर मन में इच्छा पैदा होती है, तब इन्द्रियाँ उसे करने लगती हैं। मन खाली बैठेगा तो सोचेगा, इसलिए उसे ख़ाली मत बैठने दो। उसे रामनाम सतनाम या कोई सा ईश्वर का नाम दे दो। चौबीसों घन्टे उससे उस नाम का जाप कराओ। मन से नाम लो ईश्वर का जिससे अधिकार बने और संगत करो गुरु की जिससे चाल चले ऊपर की। सदा उनकी कृपा

Scanned by CamScanner

का अवलम्बन रखो। यह मन आखीर वक्त तक धोखा दे सकता है। राम नाम की नौका में बैठकर भवसागर से पार हो जाओगे। अंतिम सांस तक राम नाम न छूटे। एक पैर ज़मीन पर है और एक किश्ती में। समझते हैं कि नदी पार हो गये। लेकिन मन यहाँ भी धोखा दे सकता हैं। यह आख़ीर वक्त तक धोखा देता है। इसलिए राम-नाम और गुरु-कृपा का सहारा कभी मत छोड़ो।

✲ ✲ ✲

आत्मा का असल निखार तब होगा जब लड़का मरने पर भी वहीं ख़ुशी हो जो लड़का पैदा होने के वक्त लोग मनाते हैं।

✲ ✲ ✲

अन्दरुनी अभ्यास करने से मन पर जोर पड़ता है। पुरानी आदतें छोड़नी पड़ती हैं। इसलिये इसके अधिकारी कम मिलते हैं। इसके अधिकारी वही हो सकते हैं जो दुनियाँ से उपराम हो चुके हैं या जिनमें परमात्मा का प्रेम कुदरती हो। निर्वाण के बाद गुरु से फायदा बहुत कम लोग हासिल कर पाते हैं जो गुरु की ज़िंदगी में ही आत्मा का साक्षात्कार कर चुके हैं। आत्मा का साक्षात्कार कम से कम एक जन्म में हो पाता है वर्ना कई जन्म लग जाते हैं। क्योंकि बग़ैर मन की ख़्वाहिशों का समाप्त किये और बिना बुद्धि की शुद्धि के आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। और मन की सफ़ाई और बुद्धि की शुद्धि कई जन्मों में हो पाती है। लेकिन जो कुछ आदमी एक जन्म में हासिल कर लेता है वह नष्ट नहीं होने पाता हैं और दूसरे जन्म में उसके आगे से शुरू करता है।

✲ ✲ ✲

कोई मुश्किल ऐसी नहीं है जो मेहनत करने से आसान न हो जाय। आदमी को चाहिए कि हिरासा न हो।

✲ ✲ ✲

Scanned by CamScanner

निर्गुण के दर्शननहीं होते, आभास होता है।

* * *

जो सुख प्रेम में है वह लय में नहीं है। इसलिये ईश्वर प्रेमी मोक्ष से बेपरवाह रहते हैं।

* * *

गुरु रास्ता चल चुका होता है। वह जानता है कि मन कैसे और कहाँ घुमाकर पटकता हैं। वह आगाह करता है कि देखो अमुक काम मत करना। अगर उसके कहने में चलते हो तो फायदा उठाते हो, वर्ना गुरु तो कहकर आगाह (सावधान) कर देता है, नुकसान तुम अपना खुद करते हो।

* * *

परमात्मा हमेशा से तुम्हारे साथ रह रहा है लेकिन और (निम्न) योनियों में तुम्हारे अख्त्यार में नहीं था कि अपने खुदी (अहँ) के परदे को हटा कर उससे मिल कर 'एक' हो जाओ। यह कहना कि वह हमको इतने जन्मों में मिलेगा व्यर्थ है। यह सब इस बात पर निर्भर है कि तुम्हें उससे कितना प्रेम है और प्रेम करना तुम्हारे हाथ में हैं। अगर तुम संसार और उसके सामान से अपना लगाव और अपनी सांसारिक इच्छाओं को अपने और उसके बीच से हटा दो तो इस जन्म की तो बात क्या, इसी वक्त वह तुम्हें मिल सकता है। सब कुछ अपने प्रेम पर निर्भर है।

* * *

सन्तों के हृदय में ईश्वर विराजता है। उनका शरीर ईश्वर का मन्दिर है। उनके स्थूल शरीर को ऋण (Minus) करके ईश्वर का दर्शन करो। वास्तव में सन्त का दर्शन ही ईश्वर दर्शन है, सन्त का संग ही ईश्वर का (या सत का) संग है। जो ईश्वर

Scanned by CamScanner

के सच्चे प्रेमी हैं वे इस दर्शन और सत्संग में ही आनन्दित रहते है। वे इसी में सदा सुखी रहते हैं। मोक्ष उनके लिए तुच्छ है।

✲ ✲ ✲

आनन्द विषयों में नहीं है, मन में है। जब वह विषय के सम्पर्क में आता है तब आनन्द महसूस करता है।

✲ ✲ ✲

जब जब मन धोखा दे, दुआ करो, मदद मिलेगी। दुआ में बड़ा असर है। जहाँ ईश्वर रहता हैं वहाँ पास ही मन भी रहता है। जब तक ईश्वर की याद रहती है, मन दूर खड़ा रहता हैं। जब ईश्वर को भूल जाते हैं, मन फौरन आकर दबा लेता हैं। इससे बचने का उपाय है नाम का सतत् उच्चारण। हमेशा नाम ही मन के हमले से बचा ले जायगा।

✲ ✲ ✲

निज कृपा के बिना गुरु कृपा और ईश्वर कृपा का कोई फ़ायदा नहीं उठा सकता यद्यपि गुरु-कृपा निरन्तर बरस रही है।

✲ ✲ ✲

वैराग का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि घर-बार स्त्री, परिवार आदि को छोड़ कर जंगल में चला जाय। जंगल में जाने से ही क्या कहीं वैराग हो सकता है? शरीर और मन तो वहाँ भी रहेंगे और जब यह रहेंगे तो इनके व्यवहार भी करने ही पड़ेंगे। सच्चे मायने में वैराग का अर्थ वीतराग होना है यानी किसी चीज़ में राग (आसक्ति) न हो। शरीर से सब कुछ भोगता हुआ भी किसी चीज़ से लगाव न रहे और न कहीं अटकाव हो। अनुराग से

Scanned by CamScanner

मतलब है कि हर समय अपने को, अपनी सूरत को परमात्मा के चरणों में लगाये रखे और उसकी मौज में अपने को लय कर दें।

✲ ✲ ✲

संसार और परमार्थ, लोक और परलोक, दोनों एक साथ नहीं मिल सकते। एक को दूसरे पर क़ुर्बान करना पड़ेगा। अगर परलोक चाहते हो तो दुनियाँ छोड़नी पड़ेगी।

✲ ✲ ✲

ख़ुदी (अहं) ही सबसे ज़बरदस्त पर्दा है। यह इस तरह समझो कि माला के दानों में सुमेर। सब बुराइयों और रुकावटों का सरताज 'अहं' (ख़ुदी) है। इस अहं के सुमेर में सब बुराइयाँ पिरोई हुई हैं। इसे तोड़ दो, सब दानें बिखर जायेंगे, सब बुराइयां दूर हो जायेंगी। यह हो कैसे? इसका उपाय यह है कि 'असल' को पहचानो।

✲ ✲ ✲

मन में परमात्मा से मिलने के लिए विरह और लगन हो, तभी फायदा हो सकता है। जब ख़ुद कोशिश की जाय और जान की बाज़ी लगा दी जाय तभी गुरु तथा ईश्वर की मदद मिलेगी और शीघ्र काम बनेगा। स्वाँस की बूंद हर सीप पर पड़ती है लेकिन मोती उसी सीप में बनता है जिसका मुँह खुला होता है।

✲ ✲ ✲

आपा (अहं) मिटे बग़ैर आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता और न आत्मानुभव के बिना उद्धार ही होता है।

✲ ✲ ✲

स्वार्थ और परमार्थ एक साथ नहीं रह सकते। केवल एक ही रह सकेगा।

Scanned by CamScanner

उस वक्त तक हर जगह नहीं जाना चाहिये जब तक पुख़्तगी (परिपक्वता) न आ जाय। फिर तो सन्त ख़ुद इजाज़त (अनुमति) दे देते हैं। इसमें Narrow Mindedness (ओछापन) नहीं है बल्कि इसमें आपको बचाया जाता है। फ़क़ीरी में आजकल दुकान दारी चल रही है। इसको लोगों ने एक व्यवसाय (Profession) बना लिया है। कोई बात ऐसी कह देते हैं जिससे अपने गुरु की तरफ से अविश्वास पैदा करके नास मार देते हैं।

* * *

जैसे फोड़े की चसक रात को नींद नहीं आने देती, ध्यान उसी तरफ़ जाता है, इसी तरह परमार्थ की चिन्ता तुम्हारी नींद उड़ा दे, ईश्वर प्रेम और उसके विरह की आग तुम्हारा कलेजा फूंक दे, मन की वासनायें उसमें जल कर भस्म हो जायें और अन्त में एक मालिक के सिवाय और कुछ शेष न रह जाय। इस हालत पर पहूँचने के लिए मन से हमेशा चोकन्ना रहना चाहिये। कभी इस चिन्ता से अचिन्त न होने पाये।

* * *

यदि आप बार-बार एक बात पढ़े या सुनें तो उस पर विश्वास हो जाता है। लेकिन यह मन का विश्वास है और चूँकि मन स्थिर नहीं हुआ, इसलिए विश्वास भी स्थिर नहीं रह पाता। जब तक उस बात पर अमल न किया जाय और उसका ख़ुद साक्षात्कार न हो जाय विश्वास पुख़्ता नहीं होता।

* * *

सन्तमत प्रेम का मार्ग है। अगर शिष्य को गुरु की सोहबत बराबर मिलती रहती है और उनकी सेवा में बराबर आता रहता है, तो जल्दी तरक्की होती है। सबसे आसान यही रास्ता है मगर

Scanned by CamScanner

शर्त यह है कि बराबर गुरु से सम्पर्क बनाये रहे।

✲ ✲ ✲

परमार्थ के मामले में किसी की परवाह मत करो। इस दुनियां से अब तक हमें कौन-सा सुख मिला है जो आगे देगी। जब जाने का वक्त आएगा तो क्या सुख ले जाओगे। इसलिए इस जिन्दगी में इसे मन से ही छोड़ दो।

✲ ✲ ✲

मज़हबी दायरों में घिरे रहना ओछापन और बन्धन हैं। हमारा रास्ता प्यार का रास्ता है। गुरुदेव कहा करते थे कि मैं किसी बन्दिश को नहीं मानता। मैं तो एक प्यार का रिश्ता जानता हूं।

✲ ✲ ✲

जितनी भी दुनियाँ की खुशियाँ और आनन्द हैं वे सबके सब किसी दूसरी चीज पर आधारित हैं और मन की ख्वाहिशात को लिये हुए हैं। अगर कोई मनचाही चीज़ हासिल हो जाती है तो बड़ी खुशी होती है। और अगर नहीं मिलती या कोई ऐसी चीज जिससे तुम्हें खुशी मिलती हो, तुमसे दूर हो जाती है, तो दुःख होता है। किसी चीज में भी हमेशा कायम रहने वाली खुशी हासिल नहीं होती क्योंकि एक तो वे चीजें जिन पर वह खुशी आधारित है, खुद हमेशा रहने वाली नहीं है। दूसरे, मन की हमेशा एक सी स्थिति नहीं रहती। जिस चीज़ से एक क्षण उसे खुशी मिलती है, उसी चीज़ से दूसरे क्षण उसे नफरत हो जाती है, दुःख होने लगता है। मिठाई खाने में बड़ी अच्छी लगती है। जब बीमार हो जाते हैं तो वही मिठाई ज़हर मालूम होने लगती है। लड़का पैदा हुआ, बड़ी खुशी हुई। पागल हो गया या मर गया, बड़ा दुःख हुआ।

Scanned by CamScanner

जो मनुष्य नियमानुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं उनको सरकार का किसी तरह का भय नहीं होता। इसी प्रकार यदि मनुष्य धर्मानुसार चले तो उनका मन शांत रहेगा। परमार्थी को इससे और आगे चलना है। यदि वह प्रकृति के नियमों के अनुसार चलेगा तो आत्मा के समीप आ जाएगा।

* * *

हमने तो यह देखा कि Character (इख़लाक) को बनाने के लिए किसी एक तरीके को ले लो, चाहे वह वेद शास्त्र का हो या कोई और। जब हकीकत पर आ जाओगे तो औरों के तरीके को देखो। आखिर सबको एक सा ही पाओगे।

* * *

परमार्थ—पथ पर चलने वाले को घबराना नहीं चाहिए। यदि वह घबरा गया तो अपने पथ से हट जाएगा। मन को शान्त रखना चाहिए तथा माँ (प्रकृति) से सहयोग करना चाहिए। माँ अति प्रबल है। उसका मुकाबला करना कठिन है, उसकी सहायता लेकर आगे बढ़ना चाहिए। माँ खिलौने दे देती है, यदि परमार्थी उस खिलौने से प्रसन्न हो गया तो वह कहीं का नहीं रहेगा। बच्चा जब रोता है तो माँ कुछ खिलौने दे देती है और बच्चा चप हो जाता है और वह अपने काम में लग जाती है। वह पुनः रोने लगता है, पुनः माँ कुछ दे देती है परन्तु यदि बच्चा रोता ही रहे और किसी खिलौने से न माने तो माँ बच्चे को गोद में ले लेती है। इसी प्रकार परमार्थी को भी खिलौने से प्रसन्न नहीं होना चाहिए। माँ (प्रकृति) धन दे देती है, स्त्री दे देती है और कई प्रकार की वस्तुएँ लुभाने को दे देती है। परमार्थी को उनसे प्रसन्न नहीं होना चाहिए, उसे तो प्रभु की गोद के लिए रोते ही रहना

Scanned by CamScanner

चाहिए। और जब तक वह गोद में न ले, अपना कार्य करते ही रहना चाहिए।

* * *

मालिक ने जब से दुनियाँ पैदा की और जीव माया में बँधे, उनके निकलने का भी तरीका बना दिया। यह तो हमेशा से है, कोई नया नहीं है। अगर यह कहे कि यह तरीका अब आया है, ऐसा नहीं है। ब्रह्म विद्या गुप्त थी, आम नहीं थी। अब आम हो गई है। भिन्न-भिन्न मतों की तालीम के शब्दों में फर्क हो सकता है। मगर भाव (Sense) एक ही है। किसी मजहब के नाम या उसके (LITERATURE) साहित्य में इस्तेमाल किये गये शब्दों के झगड़े में मत पड़ो। यह नीचे की चीज़ है। भाव (Sense) पर जाना चाहिए। किसी मजहब में अगर यह कहा जाता है कि मूर्ति-पूजक काफ़िर है, तो यह तंगदिली है। अगर कोई पत्थर को, पेड़ों को या और किसी चीज़ों को पूजता है तो उसकी उपासना सच्ची है। हाँ, अगर उस चीज को ईश्वर समझ कर ऐसा करता है तो वह काफिर है।

* * *

स्त्री मन का रूप है, इसलिए कबीर साहब तथा अन्य महा-पुरुषों ने कहा है कि स्त्री को वश में रखना चाहिए। पुरुषों का एक अपना मन होता है और दूसरा अपनी स्त्री का। उसको दो मनो पर वश करना होता है।

* * *

हमें दूसरों की त्रुटियाँ क्यों दीखती हैं? क्योंकि हमारे स्वयं के अन्तर में त्रुटियां होती हैं, तभी दूसरों के अवगुण दीखते हैं। यदि अपना मन स्वच्छ, सात्विक और कामनाओं वासनाओं से मुक्त हो गया तब दूसरों के अवगुण कम ही दीख पायेंगे। यदि

Scanned by CamScanner

किसी में त्रुटि दीखती है और वह वास्तव में ठीक है तो ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु उस मनुष्य को इन त्रुटियों से मुक्त कर दो।

* * *

यह पथ कठिन है। मनुष्य को चाहिए कि वह अन्तर में निरन्तर टटोलता रहे कि उसमें कोई कमी तो नहीं है। यदि कोई दीखे तो उनको दूर करने का प्रयास वह करता रहे।

* * *

क्या जीव ईश्वर से मिलने के बाद नाश हो गया ? नहीं वह अमर हो गया। जहाँ-जहाँ ईश्वर है वहीं वह जीव भी मौजूद है। और जब तक ईश्वर की सत्ता क़ायम है वह भी मौजूद है। इसी तरह मोक्ष पुरुष मरते नहीं। वह हमेशा-हमेशा ईश्वर में रह कर सर्वव्यापी होकर हमेशा-हमेशा जिन्दा रहते हैं। इसलिए गुरुजन मरते नहीं हैं।

* * *

जब तक मन सत-वृत्ति पर न आ जाये, और आत्मा के स्थान पर न पहुँच जाये, तब तक पाबन्दी में रहना चाहिये। दुनियाँ से डर कर रहना चाहिये और समाज व कर्मकाण्ड के नियमों का पालन करना चाहिये। जब बुराई छोड़कर अच्छाई पर आ गये, सत पर आ गये और मन काबू में आ गया तब कोई चीज अगर रास्ते में आती है तो उसकी परवाह मत करो।

* * *

केवल जंगल में जाने से तो वैराग्य नहीं होता यदि अन्दर की चाहें बनी हुई हैं। इसलिए सन्त कहते हैं कि ऐसी ख्वाहिशों को जो सामाजिक रीतियों के विरुद्ध नहीं हैं पूरा कर देने में कोई

Scanned by CamScanner

आपत्ति नहीं हैं। परन्तु भोग को शास्त्रों के अनुसार भोगें। प्रारम्भ में उन्हीं चीजों को छोड़े जो छोटी-छोटी चीजें हैं और आसानी से छोड़ी जा सकती हैं। बड़ी चीजों को लेने से निराशा होगी। आदतों का कबूल कर लेना बड़ा आसान है पर छोड़ना उतना ही मुश्किल।

✲ ✲ ✲

असली आनन्द आत्मा में है। जिस बाहरी चीज पर उनका अक्स पड़ता है मन और इन्द्रियाँ उसी में आनन्द लेने लगती हैं। लेकिन आत्मा पर जन्म जन्मान्तर से भले बुरे संस्कारों के खिलाफ पड़े हुए हैं, वह दबी हुई है। उसे उभारो। इसके लिए आत्मा को गिजा की जरूरत है। आत्मा पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आनन्द और पूर्ण सत्य है। धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने से, सन्तों के सत्संग से और उनके उपदेशों पर चलने से आत्मा को ज्ञान प्राप्त होता है। सच बोलने, अच्छे काम करने, अच्छे विचार रखने से आत्मा को गिजा मिलती है। दान करना, दया करना, किसी का दिल न दुखाना, इन सब बातों से आत्मा को बल मिलता है। आत्म ज्ञान की प्राप्ति ही ईश्वर की प्राप्ति है। वही इन्सान के जिन्दगी का (Goal) लक्ष्य है।

✲ ✲ ✲

इस रास्ते में हिम्मत की बड़ी जरूरत है। कभी घबराये नहीं। बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे। दुनियाँ से लड़ना यह है कि दुनियाँ की ख़्वाहिशात और धोखे से अपने को अलहदा रखें। परमार्थ और दुनियाँ का हमेशा से बैर रहा है। बिना दुनियाँ को फतह किये हुए परमार्थ नहीं मिल सकता। इसलिए बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे और ईश्वर की कृपा और अपनी कामयाबी का पूरा

Scanned by CamScanner

यकीन रखें। कोशिश करने पर जब कामयाबी नहीं होती तो यह उसका इम्तहान हैं, और इम्तहान यह है कि देखा जाता है कि उसमें कितनी हिम्मत है। जितनी दुनियाँ की तकलीफें होती हैं और रुकावटें आती हैं और दुनियाँ की चीजें छीनी जाती हैं यह इम्तहान है कि अपने लक्ष्य से कितना प्यार हैं और उसके लिए कितनी कुर्बानी कर सकता है।

* * *

ईश्वर तुम्हारे अन्दर है उसे प्रेम से बुलाओ। वह जरूर आएगा।

* * *

गुरू की दया, कृपा, महर सब पर होती है, लेकिन कमोबेश (न्यूनाधिक) फायदा उठाना शिष्य की हालत पर निर्भर है।

* * *

नये सत्संगी की परीक्षा नहीं ली जाता। जब वह कुछ समय के लिए अपने रास्ते पर लगा रहता है या कुछ अधिकारी हो जाता है, तब परीक्षा ली जाती है। बिना परीक्षा लिए प्रकृति माँ उसे आगे नहीं जाने देती। इतिहास बतलाता है कि बिना परीक्षा दिये हुये कोई परमार्थी ईश्वर के दर्शन नहीं कर सकता है। नये अधिकारी की परीक्षा उतनी अधिक कठिन नहीं होती है जितनी पुराने अधिकारी की।

* * *

परमार्थी में स्त्री और पुरुष दोनों के गुण होने चाहिए तभी उसमें पूर्णता आयेगी, भक्ति भी और ज्ञान भी। जहाँ दोनों का संतुलन होगा, वहीं पूर्णता होगी। संतुलन का भाव है कि अपनी इन्द्रियों, वृत्तियों और दूसरी शक्तियों पर पूर्ण अधिकार होना

Scanned by CamScanner

चाहिए। ईश्वर में सदैव लय अवस्था में रहना चाहिए और यह अवस्था हमेशा एक रस होनी चाहिए। जो मनुष्य इस अवस्था को प्राप्त करता है उसी का नाम पुरुष है।

✲ ✲ ✲

महापुरुषों को जाँचना भी आसान नहीं : महापुरुष को पहचानना उस समय तथा आसान नहीं जब तक कि वह अपनी पहिचान स्वयं न देना चाहे ताकि अन-अधिकारियों की भीड़ न लगे। इसीलिए वे अपने आपको छिपाये रखते हैं।

✲ ✲ ✲

अगर कोई शख्स आहिस्ता-आहिस्ता अपनी आदतों को ठीक करले यानी ईन्द्रिय, मन, बुद्धि को काबू में लाकर सम अवस्था में ले आये और अपनी ज़िन्दगी को सच्चाई के साँचे में ढाल दे और सन्तों की तलाश करता रहे तो जरूर उसको ईश्वर की तरफ से मदद मिलती है और कोई सन्त, ईश्वर का प्रेमी मिल जाता है।

✲ ✲ ✲

इन्सान नहीं जानता कि वह चाहता क्या और माँगता क्या है। इन्सान अन्तःकरण के घाट पर बैठा है। जैसी चाह उठती है वैसा ही करना चाहता है। जब परमात्मा के दर्शन की चाह उठती है तो वह बेज़ार हो जाता हैं और ऐसा लगता है कि वह अब कुछ दुनियाँ की चीजें नहीं चाहता। पर उसे नहीं मालूम कि अन्दर और चाहों के अम्बार के अम्बार लगे हैं। जब उसकी चाह उठेगी यह परमात्मा की चाह न जाने कहां चली जाएगी।

✲ ✲ ✲

परमार्थ का भाव है कि मन को जितना भी हो सके उतना माँझना चाहिए। सामाजिक तथा राजनितिक वृत्ति का त्याग

Scanned by CamScanner

करके सत्वृत्ति को अपनाना चाहिए। सत्वृत्ति के साथ अन्तर में कोमलता सरलता आनी चाहिए। सत्य बोला जाये परन्तु उसके साथ कड़वी बानी न हो, उसमें मिठास होनी चाहिए तथा अपनी बानी से किसी का दिल नहीं दुखना चाहिए। मनुष्य से दूसरे का दुःख देखकर अपने अन्तर में दुःख उत्पन्न हो और यह भावना आए कि किसी तरह उसी दुखी मनुष्य को उसके दुःख से निवृत्ति पहुँचाई जाय। किसी को खुश देखकर मन में ईर्ष्या न आये परन्तु मनुष्य स्वयं हर्षित हो। सबकी भलाई में मनुष्य अपनी भलाई समझे। साथ ही साथ उसकी बुद्धि निरन्तर ईश्वर का चिन्तन करती रहे। जब ऐसी अवस्था परिपक्व हो जाती है तब परमार्थी वेग से ईश्वर की ओर बढ़ता है और कुछ समय में ही वह आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है। जितनी अन्तर में पवित्रता, शान्ति तथा विचार-रहित अवस्था आती जाएगी उतना ही मनुष्य आत्मा के समीप आता जाएगा।

* * *

जब आपने मान लिया कि यह हमारे हितैषी हैं, जो बात कहेंगे हमारे हित की कहेंगे तो फिर मनमानी नहीं करनी चाहिए। जब दुनियाँ के मामलों में आप हमारी बात नहीं मानते तो परमार्थ के मामलों में क्या मानोगे। बात क्या है—आपका मन बीच में विघ्न डालता है।

* * *

परमार्थ दीनता से बनता है केवल बल और पुरुषार्थ से नहीं।

* * *

अपने अन्तर में अपनी बुराइयों तथा त्रुटियों का अनुभव करना 'ज्ञान' कहलाता है। उनको दूर करना "तप" कहलाता है।

* * *

Scanned by CamScanner

मन क्या है ? पहले इसे थोड़ा समझो। मन हमारे जन्म जन्मान्तर के संस्कारों का संग्रह है। हमारे शास्त्रों में जो ८४ लाख योनियों का वर्णन किया है वह कोई कपोल कल्पित धारणा नहीं है बल्कि एक तथ्य है। वर्तमान मन में सभी जीवों के स्वभाव की झांकियाँ मौजूद हैं। हमारे मन के अन्दर शेर का सा दम्भ, हाथी की सी मस्ती, कुत्ते एवं साँड की सी कामुकता, लोमड़ी एवं चीते की सी चालाकियाँ, कौवे जैसी धूर्तता, सर्प जैसा क्रोध, देवताओं और राक्षसों जैसी वृत्तियाँ और उनके व्यवहार स्वरूप पुराने संस्कार मौजूद हैं। किसी एक के संस्कार प्रबल होने पर हम उस योनि को पहले भोग चुके होंगे परन्तु शेष संस्कारों को अब मानव योनी में भोगना है। इस प्रकार मन पर अनेक संस्कारों का भार है। अतः जब तक इन सभी की सफाई नहीं हो जायेगी तब तक मन में स्थिरता नहीं आ सकेगी।

✲ ✲ ✲

हर परमार्थी को स्वाध्याय करना चाहिए अपने अन्तर में कमज़ोरी देखे, उसको दृढ़ता से त्यागने का प्रयत्न करना चाहिए, जैसे अधिक बोलना, अधिक खाना, दूसरों की बातों में हस्तक्षेप करना, आदि। ये ऐसी बातें हैं यदि मनुष्य चाहे तो कुछ समय के प्रयास से इनसे मुक्त हो सकता है। इसके पश्चात जो और कठिन त्रुटियाँ हैं जैसे काम, क्रोध, अहंकार आदि इनको धीरे-धीरे छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि आरम्भ में ही कठिन त्रुटियों से मुक्त होने का प्रयास किया जाएगा तो परमार्थी को निराशा होगी, क्योंकि काम, क्रोध अहंकार आदि ऐसी बातें हैं, जिनसे मुक्त होने के लिए काफी समय तक दृढ़ प्रयास की आवश्यकता है। इसलिए आरम्भ में उस त्रुटि से मुक्त होने के लिए प्रयास करना चाहिए जो सरलता से छूट जाए।

✲ ✲ ✲

Scanned by CamScanner

दुनियाँ तो छोड़ना नहीं चाहते, एक कदम आगे बढ़ाना नहीं चाहते और चाहते हैं कि तरक्की हो। कैसे हो। जब तक खुद कोशिश नहीं करोगे तब तक गुरु कृपा और ईश्वर कृपा नहीं होगीं। हम चाहते हैं कि हमारे भाई भी कुछ समझ जायें। तुम उस मामले में जो परमार्थ की तरफ ले जाता है कुछ सुनना नहीं चाहते, करना तो अलग रहा। भक्ति कैसे होगी ? फिर शिकायत करते हो कि तरक्की नहीं होती।

* * *

दूसरों के कथित अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। अपनी त्रुटियाँ देखनी चाहिए और उनका सुधार करना चाहिए। इससे दीनता आती है।

* * *

परमात्मा तब तक मदद नहीं करता जब तक हम खुद नहीं चाहते। पहले अपनी कोशिश जरूरी है, इसी को निज कृपा कहते हैं। लेकिन अपनी कोशिश करने से कामयाबी नहीं होती। जब जब यत्न कर लेते हैं, थक जाते हैं, कोई बस नहीं चलता, तब अहंकार पर चोट पड़ती है, वह चकना चूर हो जाता है, दीनता आने लगती है और कहने लगते हैं—'हे' प्रभो हमारे बस का नहीं हैं, बिना तुम्हारी कृपा के कुछ नहीं होगा। जब दीन बन जाते हैं, तो खुदी का पर्दा हट जाता है और रास्ता साफ़ होने लगता है, गुरु कृपा का आभास होने लगता है।

* * *

हर मनुष्य के व्यवहार से पता चल सकता है कि उसकी कितनी प्रगति हुई है। यदि किसी को क्रोध आता है तो यह स्पष्ट है कि उसके अन्तर में अभी अहं छिपा हुआ है। जितना मनुष्य

Scanned by CamScanner

क्रोधी होगा उतना ही उसके अन्तर में अधिक अहंकार छिपा हुआ होगा। क्रोध भले ही न आए, परन्तु यदि कोई ऐसी बात हो जाती है जो मनुष्य की इच्छा के अनुकूल नहीं होती और वह अन्तर ही अन्तर में दुखित होता है, यह अवस्था भी नीची है। परमार्थी की ऐसी अवस्था हो जानी चाहिए कि वह हर स्थिति में प्रसन्नचित रहें, चाहे कोई बात अपने अनुकूल हो या प्रतिकूल हो।

* * *

सबसे ऊँची राजी-ब-रजा यह है कि जब कोई दुःख तकलीफ आए तो यह ख्याल करें कि बड़ा अच्छा हुआ संस्कार कटा। इस संस्कार के कटने से कुछ तो नजदीकी ईश्वर से हुई।

* * *

जब कोई नया शिष्य सत्संग में आता है तो गुरुजन उससे बहुत प्रेम करते हैं। पुराने शिष्य से ऊपरी प्रेम कम हो जाता है। कई बार तो पुराने शिष्य यह समझते हैं कि गुरुदेव उनसे प्रेम ही नहीं करते। यह बात गलत है। वह अन्तर में सबके लिए प्रेमभाव रखते हैं परन्तु नये शिष्य को ऊपरी प्रेम से भी बांधा जाता है। यदि ऐसा न किया जाय तो उसका सत्संग में मन नहीं लगेगा वह तो चाहता है कि ईश्वर से उसका तुरन्त प्रेम हो जाए। लेकिन जब तक अन्तर में प्रेम नहीं उत्पन्न होगा तो आध्यात्मिक-पथ पर चलने वाले को रस नहीं आएगा और रस के बिना जीवन फीका लगेगा। इसलिए उत्साह देने के लिए गुरुजन नए सत्संगी को बाह्य प्रेम अधिक जताते हैं। वह स्वयं प्रेम-रूप होते हैं। प्रेम से शिष्य इतना आकृष्ट हो जाता है कि वह परमार्थ पथ पर चलने को तैयार हो जाता है।

* * *

Scanned by CamScanner

अगर ईश्वर से प्यार है और दुनियां से भी प्यार है तो तरक्की नहीं होती. वहीं का वहीं रहता है। इसलिए ईश्वर के प्यार के साथ दुनियां से त्याग भी जरूरी है। गुरुजन ईश्वर प्रेम और दया के सागर हैं। वे हर समय प्यार करते हैं लेकिन उसका अनुभव उसी वक्त होता है जब भक्त कोशिश करके अपने हृदय को दुनियां की ख्वाहिशात और नफरत से शुद्ध कर लेता है, इससे पहले नहीं। इसलिए घबराना नहीं चाहिए। बुद्धि, इन्द्रियों और मन का हर समय शोधन करते रहना चाहिए।

* * *

ऐसे भी लोग हैं जिनके पास धन की कमी नहीं है। अगर वह घर बैठकर भी खायें तो शायद उनकी तीन पीढ़ियाँ भी उसे खत्म न कर सकें। फिर भी रुपये में फँसे हैं, परमार्थ क्या कमायेंगे। जिसे अपने कुटुम्ब का पालन-पोषण करना है उसे तो नौकरी या तिजारत वगैरा करनी ही पड़ेगी, उसकी बात अलग है। लेकिन नौकरी पेशा या दुकान करने वाले को भी दुनियाँ में, अपने पेशे में ईमानदारी से बर्तना चाहिए। क्या आजकल नौकरी और दुकानदारी में ईमानदारी है? कोई भी अपना काम साफ नियत से नहीं करता और अगर करने की कोशिश भी करे तो लोग नहीं करने देते। खैर किसी हद तक यह भी क्षमा के योग्य है। लेकिन जिनके पास है और फिर भी वे फंसे हुये हैं, वे मन के गुलाम हैं, कैसे परमार्थ कमायेंगे।

* * *

जब मनुष्य विवेक बुद्धि से विचार करता है और यह सोचता है कि अपको और सच्चा सुख कहाँ है तब वह इस नतीजे पर आता है कि दुनियाँ और इसके सामान में वह सुख नहीं है जो

Scanned by CamScanner

स्थायी रहने वाला हो और जिसकी उसको तलाश है। यह निष्कर्श निकलने पर वह पक्का इरादा कर लेता है और परमार्थी चाल चलने लगता है। और जितनी मंजिल तय करता जाता है उतना ही दुनियाँ से वैराग्य और ईश्वर से अनुराग होता जाता है।

जो आदमी बिना ग़रज के प्यार करता है, अपने बेटे-बेटी और दूसरों के बेटे-बेटी को बिना भेद-भाव के सबको एक सा प्यार करता है, कोई फर्क नहीं समझता और जिसका प्यार जीव-जन्तुओं, वनस्पति इत्यादि सबके लिए समान है उसी के दिल में परमेश्वर बसता है। यही प्यार ईश्वरीय कहलाता है।

कभी स्वप्न में आप राजा बनते हैं और कभी आप कत्ल किए जाते हैं। राजा बनने पर बड़ी खुशी होती है और कत्ल होने पर दुःख, यह सभी भ्रान्ति के कारण था। इसी प्रकार हम सांसारिक बस्तुओं के मोह में फँस जाते हैं और भ्राँति वश उसमें सुख खोजते हैं। ख्याल से ही हम भ्रांति में फंसे हैं और ख्याल ही से छूटेंगे। यह सारी दुनियां ख्याल से ही बनी है और ख्याल ही से छूटेगी भी। इसलिए सतगुरु का ख्याल बांधकर इन सभी साँसारिक वासनाओं तथा भोगों को काटते जाओ। यही सबसे नजदीक रास्ता ईश्वर को पाने का है।

अच्छे और शुभ कर्म मन को सतोगुणी बनाते हैं लेकिन सतोगुणी मन आवागमन से नहीं छुड़ाता।

जिसने सतगुरु का सत्संग कर लिया है और रास्ता चल

Scanned by CamScanner

लिया है वह छोड़कर जायगा कहाँ ? उसकी हालत ऐसी हो जाती है जैसे जहाज़ का कौआ ।

❋ ❋ ❋

गंगा माता सन्तों को भी नसीहत करती है । गंगा माता बही चली जा रही है । उसमें सभी किस्म के आदमी नहाते हैं, बुरे भी और भले भी। कोई फूल चढ़ाता है तो कोई ग़िलाज़त डालता है । कोई उसको जगतारिणी मानता है, कोई मामूली नदी । कहीं शहर के किनारे बह रही है, कहीं बागों में से गुजर रही है और कभी गन्दगी के ढेरों में से गुजरती है लेकिन उसे कुछ ख्याल नहीं है । वह सबसे उदासीन है । एक ही धुन है कि जल्दी से अपने प्रीतम से मिलकर एक हो जाये । सबके मैल धोती है । जो उसे नापाक करते हैं उनको भी साफ़ करती है और बदले में कुछ नहीं चाहती । यही सन्तों का लक्ष्य होता है ।

❋ ❋ ❋

सन्त-मत में मन को क़ाबू में करना सबसे जरूरी बात है । इसलिए इस मत के अभ्यासियों को प्राणायाम की ज़रूरत नहीं है । हाँ, गृहस्थ आश्रम में तन्दुरुस्ती कायम रखने के लिए और वायु साधने के लिए भले ही कोई प्राणायाम करलें लेकिन किसी जानकार से सीखकर करना चाहिये वरना नुकसान हो जायेगा ।

❋ ❋ ❋

ख्वाहिश पैदा करते हो तो संस्कार बनते हैं और उन्हें भुगतने के लिए आबागम का चक्र चलता रहता है । जब तक यह ज्ञान नहीं होगा कि यह दुनियाँ सुख की जगह नहीं हैं, यहाँ तो दुःख ही दुःख हैं, इससे छुटकारा पाने की ख्वाहिश पैदा नहीं होगी और जब तक इससे छुटकारा नहीं होगा, सच्चा सुख नहीं मिलेगा ।

Scanned by CamScanner

एक ही कर्म फँसाता है और वही निकालता है। यदि उस कर्म के करने में अपने आपको शामिल कर दोगे तो फँसायेगा और अगर उसे ईश्वर का समझ कर और ईश्वर की सेवा समझ कर करोगे तो वही कर्म बन्धन से छुड़ायेगा। मालिक की याद बराबर बनी रहेगी और प्रेम व भक्ति पक्की होती जायगी।

* * *

जब किसी पर ईश्वर कृपा होती है और वह उसे अपनाना चाहता है तो उसके बन्धन टूटने लगते हैं। सबसे पहले उसकी प्यारी से प्यारी चीज़ उससे छीनी जाती है। दुनियाँदार इसे देख कर रोते हैं, सन्त ख़ुश होते हैं कि हे प्रभू ! कितना अच्छा है, इसे लेकर तूने मेरा बन्धन काट दिया। इस तरह हर क़दम पर इम्तहान होता है। बग़ैर इम्तहान के कोई उसे प्राप्त नहीं कर सकता। हर क़ुर्बानी करनी पड़ेगी। अगर उसे पाना चाहते हो तो दुनियाँ की चीजें तो क्या, गर्दन तक काट कर देनी पड़ेगी।

जब तक तन नाहीं जरत, मन नाहीं मर जात।
तब लगि मूरत श्याम की, सपनेहुँ नाहिं लखात॥

* * *

इन्सानी चोला बड़ी मुश्किल से मिलता है और इसको बे-फायदा नष्ट नहीं करना चाहिये। गुरु का कहना मानने का मतलब यह नहीं होता जो कुछ कहा जाय उसको सच मान कर चाहे अक्ल उसके खिलाफ़ फ़तवा (निर्णय) दे और मन उसको न माने, उस काम में लग जाओ। यह अंध-विश्वास है। इससे गिरने का डर रहता है। कहना मानने का सही मतलब यह है कि जो तुम्हारे अन्दर ख़्वाहिशत छिपी हुई हों उनको साफ़ साफ़ बता दो और जिस वजह से ऐसा तुम चाहते हो उसको भी समझा दो और फिर जो हुक्म दिया जाय उस पर अमल करो।

* * *

Scanned by CamScanner

भिखारी का काम माँगना है, देने वाला दे या न दे। लेकिन अगर भिखारी दरवाज़े पर पड़ा रहेगा और दरवाज़ा छोड़कर नहीं जायेगा तो एक न एक दिन मेहरबानी होगी।

* * *

दु ख बरदाश्त करने के चार रूप हैं :—

(१) मजबूरी से दुख सहन करना। यह राज़ी-ब-रज़ा (यथा लाभ सन्तोष) नहीं है।

(२) दुख को प्रभु की कृपा समझ कर बर्दाश्त करना।

(३) दुख आवे तो अपने आपको सराहे और सोचे कि हे प्रभु ! तेरी बड़ी कृपा है। न मालूम कितनी बड़ी मुसीबत थी जो तूने इतने थोड़े में ही काट दी। न मालूम सूली पर ही चढ़ना पड़ता जो काँटा ही छिद कर रह गया।

(४) दुख आवे तो यह सोचे कि मेरे प्रीतम की ओर से एक उपहार है, और उसमें ख़ुश हो। शेर खा रहा है, शरीर की बोटी-बोटी नोच कर चबा रहा है और फिर भी आवाज़ निकल रही है "शिवोहं, शिवोहं।" जो खा रहा है वह भी ईश्वर और जिसे खा रहा है वह भी ईश्वर। जलते हुए तवे पर बैठे हैं, सिर पर उबलता हुआ तेल डाला जा रहा है, दूर-दूर तक धुआँ और दुर्गन्ध उड़ रही है और फिर भी मुँह से निकल रहा है "वाह गुरु, वाह गुरु"। यह है असली और पूर्ण समर्पण—सच्ची राज़ी-ब-रज़ा यथा लाभ सन्तोष। (घटना गुरु अर्जुन देव के जीवन की है)।

* * *

गुरु अपना और परमात्मा का प्रेम हर समय देते ही रहते हैं और परमात्मा का प्रेम तो उनके अन्तर के अन्तर में मौजूद ही है। उसी से उसका रिश्ता परमात्मा से जुड़ा हुआ है। अगर ऐसा नहीं होता तो फिर किसी का उससे रिश्ता बन ही नहीं सकता और

Scanned by CamScanner

निज घर की तरफ लौटने के कोई मायने ही नहीं थे। लेकिन गुरु या परमात्मा का प्रेम उसी समय इन्सान क़बूल करता है जब इन्द्रियों के भोग, इन्द्रियों की वासनाओं और बुद्धि की तरफ़ से ऊपर उठ जाता है। इसलिये कोशिश करते रहो कि इन बातों से ऊँचे उठो। अपने मन की भावनाओं को बराबर देखते रहो और ऊपर उठाने का जतन बराबर करते रहो।

* * *

मन से सोचो और बुद्धि से विचार करो कि यह लड़का जिसे तुम अपना कहते हो, किसका है ? क्या तुम्हारे साथ आया था या साथ जायगा ? यह मकान किसका है ? क्या तुम साथ ले जाओगे ? इसी तरह हर चीज़ के बारे से सोचो तो देखोगे कि कोई तुम्हारा नहीं है। न तुम्हारे साथ आया था, न जायगा। यहाँ की कोई चीज़ तुम्हारे काम नहीं आयेगी, यह सब फँसाने वाली हैं। न मालूम तुम्हारी कितनी शादियाँ पिछले जन्मों में हुईं, कितने बेटे-बेटियाँ हुईं, कितने मकान बने, मगर अभी तृप्ति नहीं हुई ? यह सब तो होता रहा है और आगे भी हो सकता है, लेकिन मनुष्य-जन्म बार-बार नहीं मिलता। इसी मनुष्य योनि में ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, दूसरी में नहीं। इसलिये इस जन्म को अमूल्य जानकर इसका उपयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए करो।

* * *

जहाँ आपस में मौहब्बत से रह रहे हो वहीं सतयुग है। जहाँ एक दूसरे से differ करते हो (भेदभाव है) वहीं कलियुग है। दैवी जीवन वहाँ है जहाँ सब के साथ Co-operate (सहयोग) करते हो।

* * *

Scanned by CamScanner

बाज़ लोग दुनियाँवी ख्वाहिश के ज़ेरअसर इस ख्याल से कि उपदेश लेने से दुनियाँ के काम बन जायेंगे, उपदेश ले लेते हैं और इसी तरह से गुरु भी तादाद बढ़ाने की हविस और इस ख्याल से कि आगे चलकर शायद ठीक हो जायें, उपदेश दे देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि शिष्य अविश्वासी हो जाता है और गुरु को भी परेशानी होती है। अगर शिष्य अक़ीदा (विश्वास) पुख्ता होने पर गुरु धारण करे और गुरु शिष्य को परख कर उपदेश दे तो बद-एतक़ाद (अविश्वासी) होने का सवाल ही नहीं है।

* * *

माँस का लाना या बनाना तो उतना बुरा नहीं है लेकिन खाने से परहेज़ करो। कोई शख्स किसी को किसी चीज़ के खाने के लिए मजबूर नहीं कर सकता और न ही मज़हबी मामलों में दख़ल दे सकता है। यहाँ तक कि माता पिता को भी यह अधिकार नहीं है। यह अपने दिल की कमज़ोरी है।

* * *

जब आदमी को दुनियाँ की चीज़ें मिलती हैं, उनमें वह ख़ुश होता है और समझता है कि ईश्वर की बड़ी कृपा है। वास्तव में वह ईश्वर से दूर होता जाता है। उसके और ईश्वर के बीच माया आती जाती है। अगर उसकी दुनियाँ की चीज़ों पर आघात होता है, जिससे ईश्वर का सामीप्य मिले, तो वह समझता है कि मेरे ऊपर ईश्वर की कृपा नहीं हो रही है, यद्यपि बात इसके बिल्कुल विपरीत है।

* * *

सन्तमत में, आपके इस सत्संग में, (गुरु रूप) परमात्मा का प्रेम हासिल करके दुनियाँ की चीज़ें ख़ुशी और आसानी से छूट जाती है, यानी उनसे उपराम हो जाता है। उन्हें भोगता तो है पर

Scanned by CamScanner

उनसे लगाव नहीं रहता। इससे उसे दुःख नहीं उठाना पड़ता। आपको परमात्मा या गुरु से प्रेम हो गया है तो आप उसी प्रेम की शराब में मस्त और मदहोश रहते हैं। ईश्वर प्रेम का नशा ऐसा है कि आप यह चाहते हैं कि यह चौबीसों घन्टे बना रहे। यह है प्रेम से वैराग। यही सबसे सरल और छोटा रास्ता है आत्मज्ञान का, ईश्वर प्राप्ति का।

✲ ✲ ✲

एक काम को बार-बार करते रहने से आदत पैदा होती है और इस आदत के छोड़ने में जन्म लग जाते हैं। इनके छोड़ने पर ही मोक्ष का अधिकारी होता है। यह आदतें इतनी आसानी से नहीं छूटतीं जैसा तुम समझ रहे हो। जब आदमी तपाया जाता है और पिघलता है तब सुरत उस घाट से हटती है। यह आग प्रेम की या कर्म की है।

✲ ✲ ✲

क्या तुमको मालूम है कि परमात्मा इन्सान के अन्दर किस तरह रहता है? वह इसी तरह रहता है जैसे शरीफ़ घरों की पर्दों में रहने वाली बीवियाँ चिकों में अन्दर रहती हैं। वे हरेक को देखती हैं और देख सकती हैं लेकिन न तो कोई उनको देखता है और न देख सकता है। बिल्कुल ठीक परमात्मा इसी तरह रहता है।

✲ ✲ ✲

यह दुनियाँ धोखा दे रही है। दिखाई कुछ दे रहा है, असलियत कुछ और है। जो असल है वह सिर्फ़ ईश्वर है, उसे पाने की कोशिश करो।

✲ ✲ ✲

हासिल (प्राप्त) ही हासिल करना है। थोड़े से सुख को

Scanned by CamScanner

छोड़कर हमेशा-हमेशा का सुख हासिल करना है। थोड़ी सी ज़िन्दगी को छोड़ कर हमेशा-हमेशा की ज़िन्दगी हासिल करनी है। दुनियाँ की थोड़ी सी चीज़ें छोड़ने से दुनियाँ की सभी चीज़ें मिल जाती हैं। संसार को मन से छोड़ने से संसार का स्वामी बन जाता है। यही सच्चा परमार्थ है।

* * *

जब दुनियाँ की किसी चीज़ से हमें तकलीफ़ पहुँचती है या छीनी जाती है तो हमारे बुरे कर्मों की समाप्ति होती है। और जब कोई दुनियाँ की चीज़ हासिल होती है तो शुभ कर्मों के फल का नाश होता है।

* * *

हमारे यहाँ गुरु-कृपा पर ज्यादा भरोसा किया जाता है। यह प्रेम का मत है।

* * *

निर्गुण व सगुण में कोई भेद नहीं है। जब परमात्मा को अकर्मक और गुणों से अलहदा समझकर ध्यान किया जाता है तब वह निर्गुण यानी शुद्ध ब्रह्म है। और जब उसका ध्यान गुणों सहित किया जाता है (जैसे पैदा करने वाला, पालने वाला, मारने वाला, आदि) तब वह सगुण कहलाता है। पानी की कई शक्लें हैं, कभी वह भाप की शक्ल में होता है जब दिखाई नहीं देता और कभी वह बर्फ की शक्ल अख्तयार कर लेता है।

* * *

अगर कोई पत्थर को पेड़ों को या और किसी चीज़ को पूजता है और यह समझता है कि इसमें ईश्वर है तो उसकी उपासना सच्ची है। हाँ, अगर उस चीज़ को ईश्वर समझकर ऐसा करता है

Scanned by CamScanner

तो वह काफ़िर है।

✲ ✲ ✲

दया और कृपा—जो सब पर बराबर होती रहती है वह 'दया' कहलाती है, लेकिन जो ईश्वर से प्रेम करते हैं और उसके रास्ते पर चलते हैं, यह उसकी 'कृपा' हैं।

✲ ✲ ✲

ईश्वर कृपा का आभास होना या न होना अधिकार या पात्रता पर निर्भर है। इसलिये कोशिश हमेशा अपने को पात्र बनाने की करनी चाहिये और उसी के लिये प्रयत्न करना चाहिये। गंगा बह रही है लेकिन मनुष्य उसमें से उतना ही जल ले सकता है जितना उसके पास पात्र है। जिसके पास लोटा है वह लोटा भर जल भर लेता है, जिसके पास घड़ा है वह घड़ा भर पानी भर लेता है। तात्पर्य यह है कि जिसके पास जितना बड़ा बरतन है वह उतना ही ज्यादा पानी भर लेता है।

✲ ✲ ✲

प्रकाश देना दीपक के लिये स्वाभाविक बात है। उसके प्रकाश में कोई रोटी बनाता है, कोई जाल बनाता है और कोई भगवद्-गीता पढ़ता है। क्या इसमें प्रकाश का कुछ क़सूर है? इसी तरह अगर भक्त परमात्मा का नाम लेकर चोरी करता है तो इसमें परमात्मा का क्या क़सूर है।

✲ ✲ ✲

दूसरों के कथित अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। अपनी त्रुटियाँ देखनी चाहिये और उनका सुधार करना चाहिये। इससे दीनता आती है।

✲ ✲ ✲

Scanned by CamScanner

असली दाता तो प्रेम के गुरु ही हैं लेकिन शिष्य का जितना समर्पण (Surrender) होता जाता है उतना ही अधिक प्रेम वह अपने अन्दर अनुभव करने लगता है। इस तरह जब गुरु से प्रेम पूरी तरह बढ़ जाता है तो जिस निर्गुण को कभी नहीं देखा है उससे प्रेम होने लगता है और गुरु एक ज़रिया (माध्यम) मालूम होने लगता है। फिर गुरु पुश्तेपनाही (पीठ पीछे होकर मदद देने वाला) हो जाता है।

* * *

जब तक दुनियाँ की क़दर है तभी तक आपको कठिनाई मालूम देती है गुरु के पास जाने में। अभी एक बहिन हम से कह रही थीं कि हम आना तो चाहते हैं लेकिन रुपया हमारे पास नहीं है। रुपया तो है मगर दुनियाँ की क़दर ज्यादा है। इस वास्ते रुपया इस तरफ ख़र्च नहीं कर सकते, और जब दुनियाँ से उपराम हो गये और इसको (गुरु के सत्संग को) हमने मुख्य समझ लिया तो चाहे किसी तरह भी हो राह-ख़र्च के लिए हम रुपया बचा कर वहाँ जायेंगे और हर रुकावट को पार करेंगे। पैसा नहीं है तो पैदल जायेंगे। क्या लोग पुरी की यात्रा को पैदल नहीं जाते? क्यों जाते हैं?—मन में श्रद्धा है। बल्कि गुरु यात्रा को पैदल जाने का ज्यादा महत्व है, उसे ज्यादा इज्ज़त देते हैं। अगर पास पैसा नहीं है और पैरों चल कर इतनी तकलीफ़ उठा कर जाता है तो वह कितनी श्रद्धा लेकर जाता है, उतना ही उसका फल पाता है क्योंकि शौक़ (श्रद्धा) चीज़ पर तो निर्भर नहीं करता, बल्कि मन की हालत पर निर्भर करता है। आपके मन में श्रद्धा नहीं है, उत्साह नहीं है, आप किसी फ़कीर के पास जाते रहे हैं। चाव है नहीं। वहाँ पर जाकर बैठेंगे तो क्या ख़ाक़ अनुभव होगा? दूसरा बड़े उत्साह से जाता है, शौक़ और श्रद्धा लेकर जाता है, वह

Scanned by CamScanner

समझता है कि मैं किसी बड़े महापुरुष के पास जा रहा हूँ, तो वहाँ जाकर उसे बड़ा आनन्द मिलता है।

तो यह फ़र्क क्यों हो गया ? तुम्हारे मन का फ़र्क है। उस महापुरुष में कुछ कमाल है या नहीं मगर पहली बाधा तो तुम्हारा मन है। अगर मन में श्रद्धा और उत्साह हैं तो तुम कुछ न कुछ आनन्द ज़रूर महसूस करोगे और अगर उत्साह बिल्कुल नहीं है तो चाहे फ़कीर की सौहबत में कितना भी आनन्द हो, तुम्हें कुछ भी महसूस नहीं होगा। यह 'श्रद्धा' है।

* * *

हर मनुष्य के व्यवहार से पता चल सकता है कि उसकी कितनी प्रगति हुई है। यदि किसी को क्रोध आता है तो यह स्पष्ट है कि उसके अन्तर में 'अहंकार' छिपा हुआ है। जितना अधिक मनुष्य क्रोधी होगा उतना ही उसके अन्तर में अधिक अहंकार छिपा हुआ होगा।

* * *

ईश्वर-प्राप्ति का सच्चा और सीधा रास्ता

(१) हर समय यह ख्याल रखो कि ईश्वर हर पल तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारा सच्चा बाप है। प्यार से उसका पवित्र नाम लेते रहो।

(२) जिस हालत में भी उसने रखा है, चाहे वह बुरी है या अच्छी, उसमें खुश रहो। दुख और सुख की दुनिया से ऊँचे उठो। जब तक जीवन है, दुःख और सुख तो आते ही रहेंगे। उनका आना ही ज़रूरी है लेकिन अपने मन को इससे ऊँचा उठाओ और जो सेवा या कर्त्तव्य ईश्वर ने सुपुर्द किया है, उसे ईमानदारी

Scanned by CamScanner

और सच्चे दिल से पूरा करो ? हर सयम ख्याल रखो कि यह दुनियाँ ईश्वर की है। हम सब ईश्वर के हैं। जो काम हो रहा है और हम कर रहे हैं, ईश्वर के लिए कर रहे हैं। हम वहीं से आये हैं, उसी की दुनियाँ में रह रहे हैं और वहीं जाना है।

(३) अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ। ख्यालों पर क़ाबू पाने की कोशिश करो। बुद्धि को सांसारिक विचारों से हटाकर सन्तों की वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ। मन की इच्छाओं पर विजय पाओ और मन को गुरु के ध्यान में लगाओ। इन्द्रियों का आचार ठीक करो। कोशिश करो कि इन्द्रियाँ सांसारिक विष्टा रूपी पदार्थों की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें। यही रहनी सहनी ठीक करना।

(४) जब जब मौक़ा मिले, सन्तों गुरुजनों की सेवा करो। उनको प्रसन्न करो, उनके उपदेशों को हित-चित से सुनो और उन पर अमल करने की कोशिश करो। हमेशा पूरी कामयाबी होगी। कभी निराशा नहीं होगी। यही सच्चा, सीधा और सहज रास्ता ईश्वर प्राप्ति का है।

* * *

दुनियाँ का एक-एक ज़र्रा (कण), मन की एक एक ख्वाहिश (इच्छा) हमारा हर वक्त विरोध करते रहते हैं कि हमारा अपने असल (ईश्वर) से मिलन न हो।

* * *

सन्त वह है जिसने अपनी आत्मा को मन और माया के प्रपंच से आज़ाद करा करके परम अनामी पुरुष (परमेश्वर) में लय कर दिया हो।

* * *

Scanned by CamScanner

'काल' मन का मालिक है। ऐसा ख़्याल मन में डालता है कि रास्ते से हटा देता है। विश्वास ढिलमिल होने लगता है। इससे बचाव की एक ही तरकीब है, और वह हम सबको याद रखनी चाहिये। जब ऐसा विघ्न आवे तो फौरन गुरु के सामने आ जाये। और अगर अपनी बुद्धि के चक्कर में पड़ गया तो गया।

* * *

जब भी मन पर काल (माया) का प्रभाव हो, ख़्यालात ख़राब हों, हालत डिगमिग हो, तो गुरु के सामने ज़रूर जाता रहे। अगर ऐसा न हो सके तो ख़त में अपनी हालत लिख कर भेज दे। अपनी बुद्धि पर भरोसा न करे वर्ना धोखा खायगा।

* * *

सब पात्रता और अधिकार पर निर्भर है। गुरु और ईश्वर की कृपा हरेक पर हर समय हो रही है लेकिन जिसने जितने कपड़े मन और माया के पहने हुए हैं उसे उतनी ही कृपा कम अनुभव होती है। जिसने जितना अपने आप को बना लिया है, यानी अपने को मोह माया से अलहदा कर रखा है वह उतनी कृपा ज्यादा महसूस करता है। इसलिए अपने पात्र को बनाने की ज़रूरत है। अपनी आत्मा पर से मन और माया के पर्दे हटाने की ज़रूरत है।

* * *

साँसारिक इच्छाओं से अपने मन को साफ़ करते रहना अपने पात्र को बनाना है और जितना यह साफ हो जाता है उतनी ही उसकी कृपा अनुभव होती है। इसलिए हमारा कर्तव्य यही है कि अपने मन को हर समय दुनियाँ की इच्छाओं से आहिस्ता आहिस्ता साफ़ करते रहें।

* * *

Scanned by CamScanner

बग़ैर अनुराग के कोई वैराग सही नहीं होता।

✲ ✲ ✲

असली सत्संग यह है कि गुरु की वाणी को याद रखे और उनके आदेशों पर चलने का प्रयत्न करे।

✲ ✲ ✲

सारी विद्याओं, कलाओं आदि का सिद्धान्त यह है कि मनुष्य के मस्तिष्क में यह बात बैठ जाय कि मैं क्या हूँ, मेरी असलियत क्या है, और मुझ में क्या गुण हैं ? लोग हर वस्तु की क़दर और क़ीमत जानते हैं लेकिन अपने आपको नहीं पहिचानते।

✲ ✲ ✲

प्रेम में दूरी नहीं है। अगर सच्चा प्रेम है तो प्रियतम और और प्रेमी हर वक्त साथ रहते हैं।

✲ ✲ ✲

जब जब मौक़ा मिले, गुरु का ज़ाहिरी सत्संग करना चाहिये और जब दूरी हो उस समय सुरत शब्द का अभ्यास, जो गुरु का दूसरा रूप है, करना चाहिये।

✲ ✲ ✲

जिसने दुनियाँ को एक सराय समझ लिया है, सब जगह सराय का तमाशा देख रहा है और यह निश्चय हो गया है कि यह सब तो स्वप्न है जो हम देख रहे हैं, वही वेदान्ती है।

✲ ✲ ✲

हमारा रोज़ाना का यह तजुर्बा है कि छोटे से कुछ हासिल करना हो तो उससे और नीचे उतर जाय, और जितना ऊँचा बन कर चलेगा तो कभी हासिल नहीं होगा।

Scanned by CamScanner

मन को क़ाबू में लाना बहुत ही मुश्किल काम है बल्कि दुनियां में सबसे मुश्किल काम है। वैराग्य और अभ्यास दो ही इसके साधन हैं। यह निश्चय हो जाना कि यह चीजें क्षणभंगुर है यानी तब्दील होने वाली हैं और उनसे हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अलहदगी अख्तयार कर लेना चाहिये, यही वैराग्य है। परमात्मा का नाम दिल की ज़बान यानी ख्याल से लेते रहना अभ्यास है।

* * *

जो मनुष्य के भाग्य में है वह तो मिलेगा ही। उसके लिये केवल उद्यम करना पड़ता है। पुरुषार्थ करना पड़ता है परमार्थ के लिये, और यदि पुरुषार्थ करने में उद्यम की कमी हो जाय या थोड़ा बहुत दुनियाँ का नुकसान भी हो जाय तो उसका ख्याल नहीं करना चाहिए। यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिये कि यदि कोई काम अटकेगा भी तो मालिक उसका खुद प्रबन्ध कर लेंगे।

* * *

तमोगुणी मन मनुष्य को इन्द्रिय-भोगों में फँसाता है और रजोगुणी मन वासनाओं में। इन दोनों को साधकर सतोगुणी मन में मिला दो और ऊपर की ओर चलो। जब तक मनुष्य दुनियाँ-दार रहता है तब तक रजोगुणी मन में व्यवहार करता है यानी रजोगुणी मन में ही तामसिक और सात्विक वृत्तियाँ मिलाये रखता है। परमार्थी अभ्यासी तमोगुणी अवस्था को पहले रजोगुणी अवस्था में मिलाता है और फिर वहाँ से भी उसे ऊपर खेंचकर सतोगुणी मन में मिला देता है। इसके बाद यह तीनों मन आत्मा में मिल जाते हैं और आत्मा ईश्वर में लय हो जाती है। यही समाधि अवस्था है।

* * *

Scanned by CamScanner

जब किसी सन्त के पास जाओ तो पहले उसका mood (चित्तवृत्ति, भाव, धुन) देखो, तब उससे बात करो। अगर वह किसी बात को कहे कि अमुक बात सत्य है तो उसे सच मान लो और कोशिश करो कि वह बात सच साबित हो जाय। अपने मन के अन्दर, अपनी बुद्धि से विचारते रहो और ग्रहण करने की कोशिश करो क्योंकि उसका तजुरबा बहुत पुराना है। फिर, जब हम किसी के पास जाते हैं तो क्या गुरु बन कर जाते हैं या शिष्य बन कर ? हम तो कुछ लेने जाते हैं।

* * *

परमात्मा ने इंसान को अक़्ल दी है। अक़्ल से सोचकर नतीजे पर ध्यान रखकर कोशिश में लग जाना चाहिये। कोशिश करते समय नतीजे पर ध्यान बिल्कुल नहीं रखना चाहिये बल्कि हर तरफ़ से तबियत को हटा कर काम में लग जाय। जो नतीजा निकले, चाहे वह अपने ख़्याल के मुताबिक़ अच्छा हो या बुरा, ख़ुशी से क़बूल कर लेना चाहिये, क्योंकि परमात्मा आपसे ज्यादा जानता है कि आपकी भलाई किसमें है।

* * *

माला का सुमेर का दाना सबसे ऊँचे स्थान पर रहता है और सब दानों को क़ाबू में किये रहता है। इसी तरह जब सुरत चढ़ कर ऊँचे स्थान यानी आज्ञा चक्र में स्थित हो जाती है तो नीचे के सब चक्रों तथा उनसे उठने वाली वृत्तियों को क़ाबू में किये रहती हैं।

* * *

जब तक आप धर्म के काम नहीं करेंगे, बुराई को छोड़कर नेकी पर नहीं आयेंगे, तम और रज से ऊपर उठकर सतू पर नहीं आयेंगे, तब तक गुरु कृपा नहीं होगी। जब तक आप सात्विक वृत्ति

Scanned by CamScanner

पर नहीं आयेंगे और धर्म पर नहीं चलेंगे तब तक आप गुरु के प्यारे नहीं बनेंगे। गुरु के प्यारे हो जाने पर सतगुरु आपको नीचे से उठाकर आत्मा का अनुभव करा देंगे। ऐसा कहना 'कुफ्र का कलमा' है लेकिन क्या करें, ईश्वर ने यही नियम बनाया है।

✲ ✲ ✲

प्रेम और प्रीति, दो वस्तुयें हैं। प्रेम (इश्क़) हमेशा एक से होगा। परन्तु प्रीति यानी मोहब्बत सबसे होगी।

✲ ✲ ✲

अच्छे और बुरे विचार पिछले सस्कारों के कारण आते हैं। जब बुरे ख्यालों का वेग होता है तब हम दुनियाँ की तरफ़ भागने लगते हैं और जब सद्‌विचार उदय होते हैं तब हम ईश्वर की तरफ़ चलने लगते हैं। मनुष्य अपने पुरुषार्थ से सात्विक अवस्था तक भले ही पहुंच जाय मगर सात्विक अवस्था से ऊपर आत्मा के स्थान पर बिना सन्त की कृपा के नहीं पहुँच सकता। अगर सन्तों के सत्संग से अपना सच्चा कल्याण चाहते हो तो पहले 'तम' और 'रज' से निकलकर 'सत' पर आओ। तब वे कृपा करेंगे और उसके साथ ही साथ ईश्वर कृपा होगी।

✲ ✲ ✲

माशूक़ (प्रियतम) वह है जिससे प्रेम करते हैं। उसी का हो जाना, अपनी तमाम ख्वाहिशात (इच्छायें) उसी पर अर्पण कर देना, उसी के रूप को देखना, उससे प्रेम करना—यही हिन्दू या मुसलमान बनना है।

✲ ✲ ✲

अपने आपको परमात्मा के हवाले समझो। भले बुरे दोनों का ख्याल उसी की तरफ़ से है। क्योंकि ख्यालों से आज़ादी

Scanned by CamScanner

हासिल करनी है इसलिये पहले बुरे यानी मायावी ख्यालात को छोड़ते हैं और अच्छे ख्याल ग्रहण करते हैं, बाद में इनको भी छोड़ देते हैं। वरना न कोई बुरा है न अच्छा।

* * *

सत्संग में सिखाने वाले की तरफ से कुछ परमार्थी ख्याल स्वत: मिल जाते हैं और दुनियाँवी ख्यालों का ज़ोर कम पड़ जाता है, तबियत लगने लगती है। लेकिन ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं उनका असर कम होता जाता है और एक समय ऐसा आता है जब कशमकश फिर शुरू हो जाती है और दुनियाँवी ख्यालात का ज़ोर हो जाता है। इसका इलाज यह है कि परमात्मा से प्रार्थना करें, रोयें गिड़गिड़ायें। उम्मेद है कि मदद मिलेगी। अगर न मिले तो समय निकाल कर गुरु से मिलना चाहिये।

* * *

मालिक की दया की यही पहचान है कि उल्टी सुल्टी हालतें आवें और उनके आने पर मालिक का शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) हो। कभी टालने की कोशिश न करो। अगर बरदाश्त (सहनशक्ति) के बाहर जान पड़े तो उसके सामने रोओ, गिड़गिड़ाओ और बरदाश्त करने की शक्ति माँगो। उसके हर काम हमारी ही भलाई के लिये होते हैं? वह सचमुच बड़ा दयालु है। निराश न हो। दिल में चाह और दर्द पैदा करो। वह कब तुमसे दूर है? वह तो हर समय तुम्हें पुकार रहा है। ज़रा एक बार उसकी तरफ़ मुख़ातिब होकर तो देखो!

* * *

दुख और मुसीबतें परमात्मा की नियामत हैं। इनके होते परमात्मा की याद ख़ूब आती है। जब तक परमात्मा की याद

Scanned by CamScanner

बनी रहे उतनी देर का समय सार्थक, बाकी निरर्थक है।

✲ ✲ ✲

सभी नाम के परमार्थी हैं। सन्तों का परमार्थ यह है कि निर्वाह भर के लिये संसार से सम्बन्ध रखे, बाकी तोड़ दे।

✲ ✲ ✲

आत्मा और परमात्मा का प्रेम कभी मरता नहीं, दब जाता है। इसी वजह से कहा जाता है कि गुरु कभी मरता नहो, सिर्फ़ बिछुड़ना हो जाता है।

✲ ✲ ✲

जब दो क़िस्म के ख्यालात आपस में टक्कर खाते हैं तो बराबर कशमकश (संघर्ष) होती रहती है। जिसका ज्यादा अभ्यास होता है वह जीतता है और जिसका कम, वह हारता है। इसी को धार्मिक किताबों में देवासुर-संग्राम भी कहा है।

✲ ✲ ✲

सबसे बड़ी रियाज़त (अभ्यास) यह है कि परमात्मा के चरणों में ध्यान लगावें और जो दुनियाँवी तकलीफें आवें उन्हें खुशी से बरदाश्त करें। जो बात समझ में न आवे, उसे देह-धारी गुरु से दरयाफ्त करें और उस पर चलने की कोशिश करें। परमात्मा से प्रार्थना करें कि सहनशक्ति दे और अपनी याद बनाये रखे। जो शख्स परमात्मा की याद में रहते हैं उनपर शैतान यानी माया का हमला नहीं होता।

✲ ✲ ✲

शुभ कर्म करना और परमात्मा की याद रखना यही असली परमार्थ है। और उसी के लिये अभ्यास किया जाता है। अभ्यास

Scanned by CamScanner

ध्यान से शुरू करना चाहिये। इसके बाद शब्द सुनने की कोशिश करनी चाहिये और सुनाई न दे तो फिर ध्यान करना चाहिये। जिस अभ्यास में तबियत ज्यादा लगती हो वही अभ्यास ज्यादा करो, चाहे ध्यान या शब्द सुनना, जो भी हो।

* * *

जो ईश्वर पर भरोसा करते हैं उनके सब काम वह ख़ुद पूरे करता हैं। लेकिन जल्दी नहीं, कई बार आज़माने के बाद। जो सच्चे जी से उसकी शरण ले लेते हैं वही कामयाब होते हैं।

* * *

सच बोलना और हलाल की कमाई पर गुज़ारा करना बहुत बड़ी तपस्या है और अगर इसी को कोई अन्त तक निभा ले तो यह अकेला ही भवसागर से पार कर देगा।

* * *

●

जीवन-मुक्त—असली मोक्ष की दशा

सबसे पहले स्थूल से स्थूल को, यानी शिष्य को गुरु के बाहरी शरीर से प्रेम होता है और वह स्थूल सेवा पसन्द करता है, जैसे पाँव दबाना, नहलाना-धुलाना, कपड़े साफ़ करना, इत्यादि। इसके बाद उसका मन शुद्ध होने लगता है और वह सूक्ष्म हालत पर आने लगता है, यानी गुरु से हमख्याल होने लगता है। (गुरु जो ख्याल करते हैं, शिष्य उसे क़बूल करने लगता है।) यह मन का प्रेम है। यह प्रेम जब और बढ़ने लगता है तब गुरु और शिष्य एक जान दो क़ालिब हो जाते हैं, यानी शरीर तो दो अलग दिखाई देते हैं लेकिन अन्दर से वे दोनों एक होते हैं। यहाँ शिष्य की बुद्धि गुरु

Scanned by CamScanner

में लय हो जाती है। यह बुद्धि का प्रेम है। इसके बाद शिष्य को 'कारण' यानी ईश्वर से प्रेम होने लगता है। वह उसी को अपना सब कुछ मानता है लेकिन दुई (द्वैतपना) बाक़ी रहती है। इसके बाद जब प्रेम और बढ़ता है तो वह आत्मा का प्रेम कहलाता है। यही प्रेम की इन्तहा (पराकाष्ठा) है। वह सब चीज़ों में, चाहे वे जानदार हों या बेजान, अपनी ही आत्मा देखता है। सबको समान रूप से प्रेम करता है। यही वह हालत है जहाँ ईसा मसीह ने कहा था—"Love Thy neighbour as Thyself (अपने पड़ौसी को अपनी तरह प्रेम करो)। Thyself का मतलब उस अमर आत्मा से है जो तुम्हारे अन्दर है और जो सबमें है। किसी को दुख-तकलीफ हो, ऐसा मनुष्य सबके लिए रोता है। पहले इन्सान को दुख में देखकर दुखी होता है। उसके बाद जानवरों, जीव-जन्तुओं और फिर वनस्पति को उसी तरह देखता है। अगर किसी वृक्ष पर कुल्हाड़ा चल रहा है तो वह यह महसूस करता है कि जैसे उसी के शरीर पर चल रहा हो। उसकी आत्मा विश्वात्मा (Universal soul) में लय हो जाती है। सबमें एक ही आत्मा (अपना ही रूप) देखता है। 'दुई' (द्वैतभाव) मिट जाती है। जीवन-मुक्त हो जाता है। असली मोक्ष की दशा यही है। जब तक यह हालत नसीब नहीं होती तब तक लक्ष्य (Ideal) प्राप्त नहीं होता। यह बहुत मुश्किल है लेकिन गुरु कृपा का सहारा लेने और रास्ता चलते रहने से आहिस्ता-आहिस्ता यह हालत नसीब हो जाती है।

* * *

प्र०—ईश्वर अपने भक्तों से किस चीज़ की आशा करता है?

उ०—इश्वर प्रेम मुजस्सिम (साक्षात्, मूर्तिमान) है। जो आत्मायें उससे प्रेम करती हैं वे उसके समीप हैं और जो

Scanned by CamScanner

कोई आशायें और ख्वाहिशात (इच्छायें) रखती हैं वे नीचे खिसक आती हैं। जन्म धारण करती हैं, ताकि इच्छाओं को भोगकर समाप्त कर दें और असली प्रेम चमकने लगे जिसके पैदा होने पर आत्मा परमात्मा की समीपता हासिल कर लेती है। इसलिए जो जीव ईश्वर से मिलकर एक होना चाहते हैं उनको उससे असली प्रेम होना चाहिये। जो व्यक्ति अपने दोषों को दूर करना चाहते हैं वे शीशे में शक्ल देखकर अपने ख़तो-खाल (मुँह के धब्बे) ठीक कर लेते हैं वर्ना शीशा बेग़रज़ है। कोई अपनी शक्ल उसमें देखे या न देखे। परमात्मा इच्छा रहित है। उसमें कोई इच्छा नहीं। जो जीव हमेशा का सुख पूर्ण, ज्ञान और हमेशा की ज़िन्दगी चाहते हैं और जन्म-मरण के चक्कर से छूटना चाहते हैं वे उसका ध्यान करके, यानी उसमें अपनी शक्ल देखकर, इन्द्रियों, मन, व बुद्धि के जंजाल से आज़ाद हो जाते हैं और अपने असली रूप में आ जाते हैं जो आत्मा है, और उससे मिलकर एक हो जाते हैं। जो अभी तक मन के चक्कर में फँसे हैं वो पैदा होते हैं और मरते हैं।

* * *

तुम्हारा गुरु हर समय तुम्हारे साथ है, मगर मन की वासना और इन्द्रियभोग की ख्वाहिशों के नीचे दबा हुआ है। अभ्यास यह है कि मन की ख्वाहिशात और इन्द्रिय-भोग से बचो ताकि आत्मा अपने असली रूप में ज़ाहिर हो। उससे मिलकर एक हो जाना ही असली मोक्ष है। अगर इस जन्म में तुम्हारी मोक्ष न हुई तो जब-जब जन्म लोगे तुम्हारा गुरु भी तुम्हारे साथ जन्म लेगा जब तक कि मोक्ष न हो। यानी अगर तुममें आत्मा या परमात्मा की मौहब्बत है, तो जब जब जन्म लोगे, कोई न कोई आदमी ऐसा

Scanned by CamScanner

मलेगा जिसमें आत्मा या परमात्मा का प्रेम होगा और वही तुम्हारा गुरु होगा।

* * *

एक तरीक़ा ऐसा ज़रूर है जिसमें थोड़े ही दिनों में आरज़ी (अस्थाई) तौर पर आत्मा का अनुभव हो सकता है और इख़लाक़ (सदाचार) की तकमील (पूर्णता) यानी मन की गढ़त और बुद्धि की शुद्धि बाद को होती रहती है। यह तरीका ख़ास-ख़ास हालतों में ही काम में लिया जाता है। इसमें दो शर्तें ज़रूरी हैं। पहली यह कि गुरु मुकम्मिल (पूर्ण) हो। दूसरी यह कि शिष्य फ़िदाई हो यानी उसे परमात्मा के दर्शन के सिवाय और कोई चाह न हो और अपने को गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पण कर चुका हो यानी गुरु के हुक्म के पालन के सिवाय उसे और कोई धुन न हो। जब यह दोनों हालतें मिलती हों तभी काम आसानी से बनता है।

* * *

मन बहुत दूर जाता है और ख्वाहिश किसी न किसी क़िस्म की बाक़ी रहती है। दिल के वर्तन को मांजे जाओ और गुरु के फ़ैज़ से धोते जाओ। एक दिन वह वक्त आयेगा जब तमाम बुराइयाँ धुलकर दिल का वर्तन चमक उठेगा और प्रीतम का दीदार नसीब होगा। यह ख्याल न करना कि तुम में नुक़्स नहीं हैं। यह शैतानी धोखा है।

* * *

पहले ख्याल पैदा होता है और फिर ख़्याल में पुख्तगी। यानी अगर सच्ची लगन है तो उसी के मुताबिक़ काम करने लगता है और फिर वह चीज़ मिल जाती है। ऐसा नहीं हो सकता कि सच्ची लगन हो और चीज़ न मिले। यह कानून के ख़िलाफ़ है, देर और सबेर ख्वाहिश पर निर्भर है।

Scanned by CamScanner

नफ़सानी ख्वाहिश यानी कामेन्द्रिय पर बहुत देर में क़ाबू आता है। इसका एक परहेज़ है और एक इलाज है। परहेज़ यह है कि स्त्रियों की सौहबत से हमेशा परहेज़ रखें और अपनी स्त्री के सिवाय एकान्त में किसी के साथ न बैठें। इलाज यह भी है कि जो स्त्री सामने से गुज़रे उसके चरणों में अपना सर ख्याली तौर से रखें और दिल में प्रार्थना करें कि "हे माता, तू जगत जननी का अवतार है, मैं तेरा कमज़ोर बालक हूँ, मेरा इम्तहान न ले।" अगर यह इलाज और परहेज नहीं करेगा तो कभी कामयाबी नहीं होगी।

* * *

मन दुनियाँ में मुद्दत से फँसा हुआ है और दुनियाँवी ख्वाहिशात (इच्छायें) हर समय उठाता रहता है। दुनियाँ में सबसे मुशकिल काम इससे छुटकारा पाना है। सन्तों ने इसका एक ही इलाज बताया है कि इसको परमात्मा या गुरु के चरणों से बाँध दो। शुरू में यह बड़ी उछल कूद मचाता है लेकिन अगर गुरु कमाई किये हुये हैं और शिष्य में श्रद्धा, विश्वास के साथ गुरुप्रेम है तो यह आहिस्ता आहिस्ता रुकने लगता है। रुकने में इसको आनन्द आने लगता है और जितना ज्यादा यह रुकता है उतना ही आनन्द भी बढ़ाता जाता है। इसलिये शुरू-शुरू में यह नहीं रुकेगा। कोशिश करो कि दुनियाँ से हटकर परमात्मा में लगे। घबराओ नहीं, काम, मुश्किल है लेकिन फिर भी बड़ा सुखदायक है और हमेशा रहने वाला है। जो मेहनत करते हैं और लगे रहते हैं उन्हें ज़रूर कामयाबी होती है।

* * *

शुरू में आर्थिक स्थिति ख़राब होने से तबियत परेशान होती है लेकिन आगे चलकर इसमें आनन्द आता है। परमात्मा जिसको

Scanned by CamScanner

प्यार करता है उसको भूखा भी रखता है ताकि वह उससे गाफ़िल न हो जाये। अगर वह एक समय देना चाहता है तो हम दो समय क्यों माँगें ? उससे कुछ मत मांगो। माँगो तो सिर्फ उसका प्यार माँगो। अगर दोनों समय नहीं मिलता तो एक समय खाओ और जिस हालत में रखे, उसमें खुश रहो और उसका शुक्र अदा करो। विश्वास रखो कि यह हालत ज्यादा दिन नहीं रहेगी।

✲ ✲ ✲

मैं यह ज़रूर चाहता हूँ कि ब्याही हुई लड़कियाँ अपने पति की आज्ञा में और कुवाँरी लड़कियाँ अपने बाप, भाई या किसी सरपरस्त (guardian) के कहने में रहें। आज़ाद लड़कियाँ परमार्थ नहीं कमा सकतीं और उनको मुझसे मिलने से कोई फ़ायदा नहीं।

✲ ✲ ✲

शारीरिक सेवा (गुरु की) शरीर से करो, रुपये पैसे से सत्संग की मदद करो, दिल से भलाई चाहो, गुरु की तन्दुरुस्ती और उसके उद्धार के लिये परमात्मा से प्रार्थना करो, सबका भला चाहो। जो ख़िदमत कर सको करो। जो काम करने को बताया जाय उसको खुशी और दिल लगा कर करो। इससे गुरु के दिल में और ज्यादा मौहब्बत होगी जिसका असर तुम पर पड़ेगा और तुम में भी मौहब्बत बढ़ेगी।

✲ ✲ ✲

प्रकाश का बाहर दीखना भी अच्छा है। यह प्रकाश बाहर नहीं अन्दर दिखाई देता है, लेकिन बाहर महसूस होता है। रुलाई का आना अच्छा है, इससे आगे की तरक्की होती है। सन्ध्या के वक्त बदन का खिचाव होना इस बात की निशानी है कि सुरत

Scanned by CamScanner

ऊपर को चढ़ती है। थोड़े दिनों के अभ्यास के बाद इस तकलीफ़ का महसूस होना जाता रहेगा।

✲ ✲ ✲

झींगुर के बोलने की आवाज़ या घन्टे के बजने की आवाज़ दिमाग़ी शब्द है। घन्टे के बोलने की आवाज़ पर ध्यान जमाना चाहिये। यह प्रथम शब्द है। इसके पुख़्ता होने पर सुरत ऊपर को चढ़ने लगती है और दूसरा शब्द सुनाई देने लगता है। जहाँ तक हो, उसके सुनने का अभ्यास करते रहो। उठते, चलते फिरते, काम काज करते हुए यह अभ्यास करते रहो। इस तरह यह पुख़्ता हो जायगा और आगे का रास्ता खुलेगा। शक्ल का दिखाई देना, कभी डर लगना या खुशी होना—यह अपने ही ख्याल का नतीजा है जो स्थूल रूप धारण कर लेता है। भजन या ध्यान में लग जाने पर यह खुद ही ग़ायब हो जाता है। इससे घबराना नहीं चाहिये।

✲ ✲ ✲

जो कर्म किये हैं उनका फल अवश्य मिलता है। लेकिन अगर परमात्मा के चरणों का आसरा लिये रहो तो कर्म आसानी से कट जाते हैं और आगे के संस्कार नहीं बनते।

✲ ✲ ✲

अभ्यास करते जाओ। हालत जानने की कोशिश मत करो, वक्त पर सब खुल जायगा। यह प्रेम का मार्ग है। इसमें करनी कोई ज्यादा फ़ायदा नहीं करती, मगर उसका सहारा ज़रूर लेना चाहिये। मैं कोई ऋषि या बड़ा अभ्यासी नहीं हूँ। मुझ में सबका प्रेम है और मैं सबको प्यार करता हूँ। इसमें धोखा नहीं है और तुम इस पर भरोसा कर सकते हो।

✲ ✲ ✲

Scanned by CamScanner

इन्सान में दो शक्तियाँ काम कर रही हैं--एक मन, दूसरी आत्मा। मन दुनियाँ की चीज़ों का रसिया है, उसको दुनियाँ की चीज़ों में ही रस मिलता है। दूसरी शक्ति आत्मा की है जिसको कि परमात्मा के प्रेम में आनन्द मिलता है। बीमारी की हालत में आत्मा कमज़ोर पड़ जाती है और मन का ज़ोर होता है, इसलिये मन पूजा से भागता है।

* * *

जो कपड़ा ज्यादा मैला है वही ज्यादा सफ़ाई का हक़दार है। ज्यादा गुनहगार होना भी इस मायने में एक बरकत है, और सफाई भी ज़रूर होगी अगर कहने के मुताबिक अमल किया जाय और जो इलाज बतलाया गया है उस पर विश्वास रखा जाय।

* * *

मन जिन चीज़ों का आदी हो जाता है उनको आसानी से नहीं छोड़ता है, उनका चिन्तन करता रहता है और मौक़ा मिलने पर उनको भोगता है। लिहाज़ा जिन चीजों को आप बुरा समझते हैं, कोशिश कीजिये कि वे आपके सम्पर्क में न आयें वर्ना कोशिश करने पर भी आप उनसे न बच सकेंगे।

* * *

जहाँ तक हो सके सबके साथ मिल कर सत्संग कीजिये। अभ्यास पर ज़ोर दीजिये और मन को अभ्यास से किसी वक्त भी ख़ाली न होने दीजिये।

* * *

दुर्गा का स्थान कण्ठ का है, शिव का स्थान हृदय का है, हनुमान का स्थान गुदा (मूलाधार) का है और 'ॐ' का स्थान

Scanned by CamScanner

आंखों के बीच का है। यह सब रास्ते की सैर है। जो दिखाई दे, देखते चलें। ख्वाहिश मत करें।

✲ ✲ ✲

जब इन्सान किसी भोग में फँस जाता है तब अव्वल तो उनको बुरा नहीं समझता जब तक कि कोई उसके नुक्सों से उसे आगाह न करे और आगाह हो जाने पर भी उसकी इच्छा-शक्ति इतनी कमज़ोर हो जाती है कि बुराइयों को जानने पर भी और उनकी तकलीफें देखते हुए भी अपने आपको उनसे निकाल नहीं सकता। इसलिए ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो इस रास्ते पर चला हो और जिसने अपनी आत्मा को इस प्रपंच से निकाल लिया हो, जो हमारा हमदर्द हो, जिसकी इच्छा-शक्ति इतनी प्रबल हो कि हमको मदद दे सके। ऐसे व्यक्ति के मिल जाने के बाद ज़रूरी है कि हम अपनी कठिनाइयों को उसके सामने रखें, उससे कोई पोशीदा न रखें, जो राय वह दे उस पर अमल करें, समय-समय पर उसके सत्संग से लाभ उठाते रहे और अपने हाल से उसको सूचित करते रहें।

✲ ✲ ✲

यदि किसी सन्त से आपका नाता जुड़ गया है तो यह सत्य है कि संकटग्रस्त परिस्थितियों में गुरु से सहायता मिलती है। आगे प्रगति होने पर ऊपरी लोकों में भी गुरु के दिव्य दर्शन होते हैं और उसके विदेह होते हुए भी मार्ग निर्देशन मिलता रहता है।

✲ ✲ ✲

सच्चे प्रेमी ईश्वर से कुछ नहीं चाहते। तेरी याद बनी रहे। दुःख मुसीबत आते रहें जिससे ईश्वर की याद बनी रहे। जो

Scanned by CamScanner

ईश्वर को ज़िन्दगी, ज्ञान, और आनन्द की प्राप्ति की ग़रज़ से पूजते हैं वे भी एक तरह से स्वार्थी हैं।

* * *

यह सोच कर मत बैठो कि परमात्मा बड़ा दयालु है, वह सब काम ख़ुद ही कर लेगा। पुरुषार्थ करो, यही निज-कृपा है। पहले निज-कृपा, फिर गुरु-कृपा और तब ईश्वर-कृपा होती है। आराम से लेटे रहो, कुछ करो धरो नहीं और सोचो कि सब हो जायगा। कैसे हो जायगा? कोई आदत बुरी पड़ गई है और छूटती नहीं है तो उसे दूर करने की कोशिश करो। अगर किसी डर की वजह से कोई आदत छूटती है तो वह अस्थायी है। जहाँ डर गया और फिर वह आदत आ गई। उससे नफ़रत पैदा हो जाय तब वह स्थायी रूप से जायेगी। इसका एक सरल तरीका सन्तों ने बताया है—गुरु से प्रेम बढ़ाओ और जितना प्रेम बढ़ता जायगा उतनी दूसरी चीजों से नफ़रत होती जायगी। गुरु के प्रेम में तुम वह काम करना स्वयँ बन्द कर दोगे जो उन्हें पसन्द नहीं है। इस तरह बुरी आदतें धीरे-धीरे ख़ुद छूटती चली जायेंगी।

* * *

मन दब भले ही जाय, जल्दी मरता नहीं, कुतर-बोंत किया करता है। इसको तो सिर्फ़ वही मार सकता है जो अन्तर की चढ़ाई कर चुका होता है। सन्तों ने इसका सरल और जल्द असर करने वाला और जो पूर्ण है, रास्ता निकाला है। वह यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ो जो अपने आपको ईश्वर में लय कर चुका हो। उसका प्यार ईश्वर का प्यार होता है। ऐसे व्यक्ति का मन खत्म हो चुका होता है। इस अवस्था में दुनियाँवी इच्छायें फुज़ला (विष्टा) नज़र आती है। ईश्वर का प्यार मिल जाने पर आत्मा

Scanned by CamScanner

खुद ही मन से न्यारी हो जाती है। आत्मा पर से जो आनन्द आता है उसे भोगता तो मन ही है, लेकिन समझता है कि यह आनन्द विषयों में ही है।

✲ ✲ ✲

जो वास्तव में परमार्थ की खोज में हैं उन्हें कोई धोखा नहीं दे सकता। धोखा भी सिर्फ़ वही लोग खाते हैं जो धोखा देने जाते हैं। जैसे सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिए सिद्धों की तलाश में घूमने वाले लोगों को बार-बार धोखा खाना पड़ता है। क्योंकि ऐसे लोग थोड़े से चढ़ावे में अधिक धन की कामना करते हैं या पैसे के बल बूते पर सन्तान, नौकरी, तरक्की, रोग नाश आदि की कामनायें पूर्ण कराना चाहते हैं। ऐसे ही व्यक्ति धोखा खाते हैं क्योंकि यहाँ परमार्थ की बात न रहकर व्यापारिक बात बन जाती है। जो तेज़ होता है वह लाभ उठा जाता है।

✲ ✲ ✲

ख़्याल करो कि मैं नहीं हूँ जो कुछ है ईश्वर है।' मन और माया को खत्म कर दो। मन और माया से रहित जो बचेगा वही तुम हो।

✲ ✲ ✲

वह मालिक न मिले, ऐसा तो हो नहीं सकता। मिलकर ही रहेंगे तेरी मर्जी ऐसी ही है कि हम बुरे कहलायें तो यही अच्छा है। लेकिन अगर तू चाहे कि हम तुझे छोड़ दें, ऐसा तो हो नहीं सकता। ख्यालात आया करें, सन्ध्या, पूजा चाहे हो या न हो, एक तेरा ख्याल न छूट जाय।

✲ ✲ ✲

फँसे हैं सबसे हीन अवस्था में, पहुँचना चाहते हैं सबसे ऊँचे लोक में। पाताल में खड़े हो, पहुँचना चाहते हो आसमान में।

Scanned by CamScanner

जिससे कहो कि तुम्हारी फ़लाँ बात ठीक नहीं हैं, वही नाराज़ हो जाता है। कोई विरला है जिससे कहते हैं तो वह सुन लेता है; वरना जिससे कहते हैं वही मुँह बना लेता है। बुरा मान जाता है। कैसे तरक्की हो ? जो गुरु के कहने पर चला वह इस भवसागर से निकल गया।

* * *

इस दुनियाँ में हमारे आने का ध्येय क्या है ? हम चाहते यह हैं कि हमें पूर्ण जीवन मिल जाय जहाँ मौत का खौफ़ न हो, पूर्ण ज्ञान मिल जाय, जहाँ अज्ञान का नामोनिशाँ न हो और पूर्ण आनन्द प्राप्त हो जाय जहाँ लेशमात्र भी दुःख न हो। यही सत-चित-आनन्द कहलाता है।

* * *

किसी को एकदम गुरु धारण करना आवश्यक नहीं है। कुछ दिन सत्संग करो। उन महापुरुष को आप भाई, पिता, दोस्त कुछ भी मान लें। आपको लाभ ही होगा। सन्त के चारों ओर का वातावरण आध्यात्मिकता से भरपूर रहता है। किसको कितना लाभ होता है यह जिज्ञासु एवं भक्त की ग्रहण शक्ति पर निर्भर है परन्तु यह निश्चयात्मक तथ्य है कि बग़ैर गुरु के ईश्वर प्रेम नहीं मिल सकता।

* * *

हमारे जिस्म के अन्दर कई आवरण हैं। उनके सबसे भीतर परमात्मा बैठा है। सन्त उसको बाहर नहीं तलाश करते बल्कि अपने अन्दर देखते हैं। इस काम में दो बातें ज़रूरी हैं। पहली यह है कि रास्ता जानना चाहिए और दूसरी यह कि ऐसा पथप्रदर्शक चाहिए कि जो खुद रास्ता चल चुका हो, उससे अच्छी तरह वाकिफ़

Scanned by CamScanner

हो, जिसमें दूसरे को रास्ता बताने की योग्यता हो और वह तुम्हारा हमदर्द भी हो। इसके अलावा जिज्ञासु में पक्का इरादा रास्ता चलने का हो और रास्ता बताने वाले में पूरी श्रद्धा और विश्वास हो। तब रास्ता चला जा सकता है। रास्ता जानने वाले की पहरेदारों से जान पहचान हो तभी वे अन्दर जाने देंगे, वरना पीछे ढकेल देंगे। कहने का मतलब यह है कि पथ प्रदर्शक ऐसा हो जो परमार्थ के रास्ते की सब कठिनाईयों को जनता हो और पंथाई को उनमें से होकर निकाल ले जाने की पूरी योग्यता रखता हो।

* * *

मन हमेशा बदलता रहता है और उसके प्रभाव में आकर आप भी बदलते रहते हैं। जब कोई वस्तु मिलती है तब सुख होता है और जब छिन जाती है तब दुःख होता है। यह दुःख,सुख लगातार चलता है। इस दुनियाँ का आख़िरी अन्जाम (फल) जुदाई है। जहाँ यह हालत है वहाँ असली सुख कैसा ? सन्तों के देश यानी-दयाल देश में आत्मा ही आत्मा है। वहाँ प्रेम ही प्रेम है, आनन्द ही आनन्द है। तुम उसी देश के वासी हो लेकिन अज्ञान के कारण अपने घर से दूर पड़े हो। जो अज्ञान अभी बना हुआ है उसे दूर करो।

* * *

प्रेम या मौहब्बत क्या है ? जहाँ नफ़रत न हो, वासना न हो, कोई इच्छा न हो। जहाँ देखने की, चिपटाने की या छूने की चाह है वह इन्द्रियों का प्यार है। हमारे मन की इच्छायें जिससे पूरी हों वह मन का प्यार है। जहाँ न ख्याल है न ग़रज़ है न और कुछ, सबका भला ही भला चाहता है वही सच्चा प्यार है। ऐसे प्रेम में प्रेमी ईश्वर को अपने से अलग नहीं मानता है। जहाँ ऐसा प्यार है वहाँ तकदीर और तदबीर कुछ नहीं चलती। वह जो चाहे सो कर

Scanned by CamScanner

सकता है। यही रूहानियत है। Universal Love, Love All Without Distinction, (विश्वव्यापी-प्रेम, सबको ऐसा प्रेम करो कि कोई भेदभाव न रह जाय)। यह वही कर सकता है जिसने अपनी आत्मा के दर्शन कर लिए हैं।

* * *

जो ऊँचे अभ्यासी हैं उन्हें मन दूसरी तरह मारता है। अगर भाइयों की सेवा का काम सुपुर्द कर दिया गया तो समझने लगे 'मैं गुरु हूँ', पैर पुज रहे हैं, मन आनन्द ले रहा है। यह क्या किया तुमने? अहंकार में फँस गये। अधम योनियों में गये। जिसने अपने को गुरु समझा, गया। गुरु तो केवल एक है, परमेश्वर! वही असली गुरु है।

* * *

जो बुरा या भला हमने किया है उसका फल भी हम ही भोगेंगे। हम अपने आपको उसका कर्त्ता समझते हैं तो हम उसके ज़िम्मेदार हो गये। इन सबसे ऊँचे उठो। अपने आपको ख्याली तौर पर हमेशा गुरु चरणों में लगाये रखो और उसी ख्याल में डूबे रहो। अब जो कर्म अपने आप हो गया वह हो गया। ऐसा तो होना ही था। जब गुरु के चरणों में लगा है तो उसे लगा रहने दो। उस वक्त उसे हटाकर अच्छाई या बुराई की तरफ़ लगाओगे तो वह और मज़बूती के साथ उस बुराई भलाई को करेगा। अपने आपको ईश्वर के ध्यान में इतना तल्लीन कर दो कि हर वक्त उसी में लगे रहो। बुराई भलाई का अगर ख्याल आता है तो उसमें मत फँसो। इस तरह अभ्यास करते-करते मन स्वयं शान्त हो जाएगा।

* * *

Scanned by CamScanner

इस दुनिया में कोई तुम्हारा नहीं है। यहाँ की चीज़ों को एक-एक करके, तजुर्बा करके छोड़ दो। यह तो तुम्हें तजुर्बे के लिए मिलीं थीं। भ्रम से तुम इन्हें अपनी समझ बैठे। अगर गुरु के कहने में चलोगे तो यहाँ की चीज़ों का तजुर्बा भी होता चलेगा और उन्हें छोड़ते भी चलोगे और अगर बराबर गुरु के कहने में चलते रहोगे तो एक न एक दिन तुम्हें असली तजुर्बा यानी आत्म-बोध हो जायेगा। पहले गुरु के कहने पर विश्वास करो, उसमें श्रद्धा लाओ, उसका सत्संग करो और उसके कहने पर चलो। जो ऐसा करता है उसको आसानी से आत्म-बोध हो जाता है। जो तर्कवादी होते हैं उन्हें कठिनाई होती है। विश्वास से रास्ता जल्दी तय हो जाता है।

* * *

पूजा, ध्यान और आन्तरिक अभ्यास अपना फ़र्ज़ समझ कर किये जाओ। फ़ायदा होता है बहुत अच्छा, नहीं होता तो भी बहुत अच्छा। सचाई पर क़ायम रहो और जो रास्ता तुम्हारे गुरु ने बताया है उस पर चलते रहो। जो व्यक्ति रास्ता चलते रहते हैं वे तरक्की करते जाते हैं और ज्यों-ज्यों उमर बढ़ती जाती है और दुनियां में नाकामयाबी होती जाती है तो वही दुनियाँ दुःख का रूप बन जाती है और उससे वैराग्य होने लगता है।

* * *

अपनी तरफ़ देखो और अपने प्रेम को शुद्ध और बेग़रज बनाते चलो। तुम्हें क्या मतलब कि (गुरु) वह किसको प्यार करता है और किसको नहीं करता है।

तुझे सामने बैठा के मैं यादे ख़ुदा करूँ।
तू मुझे देखे न देखे, मैं तुझे देखा करूँ॥

Scanned by CamScanner

अपना रूप समझो। आत्मा को मन से हटाओ, वासनाओं से रहित हो जाओ। जब आत्मा के ऊपर के पर्दे हट जाएंगे फिर तुम अपना असली रूप देख सकोगे कि तुम कौन हो? तुम तो ईश्वर खुद हो। जब तुम अपने आपको पहिचान जाओगे तब किस की पूजा करोगे? तुम स्वयँ आनन्द हो, आनन्द की तलाश कहाँ करते हो?

* * *

एक तरफ़ तो तराज़ू का वो पलड़ा है जिसमें मनों का बोझ है यानी दिन रात के चौबीसों घंटों में कुछ मिनट छोड़कर दुनियाँ में ही व्यवहार कर रहे हो और उसी के सोच विचार में पड़े हो। दूसरी तरफ़ का पलड़ा बहुत ही हल्का है। परमार्थ के कामों में या सन्ध्या पूजा में अगर बैठे तो दस-पाँच मिनट के लिए और उसमें भी एक-दो मिनट तबियत लगी तो लगी वरना मन में दुनियाँ के ही विचार आते रहे। अब तुम ही सोचो कि सारे दिन तो दुनियाँ का काम किया और एक-दो मिनट पूजा में लगा तो कैसे काम चलेगा?

* * *

आत्मा का आनन्द एक ऐसा अद्भुत आनन्द है कि उसे पाने के बाद किसी और आनन्द की ज़रूरत नहीं होती, उस आनन्द से मनुष्य कभी तृप्त नहीं होता। जिस आनन्द से मनुष्य की तृप्ति न हो और ख्वाहिशात बनी रहें वह मन का आनन्द है। मन के आनन्द में एक आनन्द के बाद दूसरे आनन्द की ज़रूरत होती है।

* * *

जिन बातों की धर्मशास्त्र आज्ञा नहीं देता उनसे बचो, अपने आप पर रोक टोक लगा दो। जैसे, पर-स्त्री के साथ अकेले में मत

Scanned by CamScanner

बैठो। जो बातें मर्दों के लिए हैं वही स्त्रियों के लिए भी हैं। अगर कभी अवसर पड़े तो किसी को साथ रखो। तुम कितने ही धर्मात्मा हो लेकिन मन पर कभी भरोसा नहीं कर सकते। यह बड़ा धोखे-बाज़ है। कोई दावे के साथ यह नहीं कह सकता कि उसने मन को जीत लिया है। जिसे ईश्वर ने अपना लिया है वही मन के धोखे से बच सकता है। मन में बीज रूप से इच्छाएं बनी रहती हैं और जब वातावरण उनके अनुकूल होता है तो वे उभर आती हैं और इन्सान को फँसा लेती हैं और अपना रूप धारण कर लेती हैं। जब सब ख्वाहिशात मन से, शरीर से और बीज रूप से निकल जाएं तब समझो कि अब कोई ख्वाहिश बाक़ी नहीं है। पेड़ के पत्ते, टहनियों और तना काट देने से यह मत समझो कि पेड़ मर गया। अभी जड़ें बाक़ी हैं और वे चारों तरफ ज़मीन में गहरी घुसी हुई हैं। अनुकूल वातावरण मिलते ही उनमें फिर पत्ते और डालियाँ निकल आएँगी।

ईश्वर प्राप्ति के साधन हैं—विवेक, वैराग्य, षट-सम्पत्ति और मुमुक्षता। पहले इन्द्रियों को विषयों से हटाओ, मन को वासनाओं से शुद्ध करो, बुद्धि तम और रज से निकल कर 'सत' पर आ जाय और मन शान्त हो जाय। तभी आत्मा का प्रकाश दीखेगा। बुद्धि जब तक निर्मल होकर आत्मा की तरफ नहीं पलटेगी तब तक खुला ज्ञान नहीं मिलेगा और बिना सत् ज्ञान के न तो आत्मा का अनुभव होगा न प्रेम जागेगी न परमात्मा मिलेगा। परमार्थ कमाने के लिए तन, मन, धन सब कुछ लगाते रहें और यह देखते रहें कि मन उनमें अटकने न पाये।

Scanned by CamScanner

प्रेम और त्याग, शुरू में दो रास्ते हैं। सन्तमत में प्रेम के रास्ते को लेते हैं, अन्य मतों में त्याग को। असल में दोनों आगे चल कर एक ही हैं। प्रेम से त्याग खुद-ब-खुद हो जाता है। अगर आप को हमसे प्यार है तो जो चीज़ हमें पसन्द नहीं है वह आप खुद ही छोड़ देगें। प्रेम में आनन्द है और ज्यों-ज्यों प्रेम बढ़ता है आनन्द उतना ही बढ़ता जाता है। जब ऊँचा आनन्द मिलता है तो नीचा आनन्द छूटता है।

* * *

जिस गुरु के ध्यान के साथ-साथ जीवन में एक बार भी आपको प्रकाश नज़र आया है तो समझ लीजिए कि वह सचखण्ड तक पहुँचा हुआ है। पहले ऐसे गुरु की तलाश करो, फिर उसका सतसंग और दिया हुआ नाम लो। वह नाम चाहे राम हो, कृष्ण हो, ॐ हो या चाहे कोई और नाम हो। जिस नाम को जपकर उसने परमेश्वर को हासिल किया है वही नाम तुम्हें भी ईश्वर की प्राप्ति करा देगा।

* * *

जब भी मन पर काल का प्रभाव हो, ख़्यालात खराब हों, हालत डिगमिग हो, गुरु के सामने ज़रूर जाता रहे अगर ऐसा न हो सके तो खत में अपनी हालत लिख कर भेज दे। अपनी अक़ल पर भरोसा न करे वर्ना धोखा खायगा।

* * *

बन्दर का बच्चा अपने बल बूते पर माँ के पेट से चिपटा रहता है इसीलिए वह कभी-कभी छूट कर गिर जाता है। मगर बिल्ली का बच्चा माँ के भरोसे रहता है यानी उसे बिल्ली अपने मुँह में लटका कर उठाये फिरती है। इसीलिए वह गिरता नहीं।

Scanned by CamScanner

जब तक हम साधक अवस्था में रहते हैं तब तक हमारी बन्दर के बच्चे की सी हालत है। और जब हम इन्द्रियों पर काबू पाकर, बुद्धि की चतुराई छोड़कर एक ईश्वर पर भरोसा करने लगते हैं, तब हमारी हालत बिल्ली के बच्चे की तरह हो जाती है। तब ईश्वर खुद हमारी संभाल करता है।

* * *

ईद क्या है, सब मुसलमान नहीं जानते। चालीस दिनों तक उपवास करने के पश्चात् चाँद का दर्शन आज्ञाचक्र में प्रकाश रूप में होता है। कितनी कठिन रियाज़त (तप) है? वही इसकी असलियत जान सकता है जो इस रास्ते पर चल चुका होता है। सच खच्ड में पूर्ण ईश्वर का दर्शन होता है। पूजा दयाल देशाधिपति की करते हैं। वह चौथे देश में रहता है। काल पुरुष का सबसे बड़ा अवतार कृष्ण रूप में हुआ था। ब्रह्माण्ड की रचना का मालिक काल पुरुष है। काल पुरुष ब्रह्माण्ड तक ही पहुँचा सकते हैं। जो आत्मा ब्रह्माण्ड तक ही चढ़कर रह जाती है वह पुण्य क्षीण होने पर पुनः वापिस आती है। उस अवस्था में अगर तमोगुणी वृत्ति प्रधान होती है तो वासनाओं को भोगने के लिये नीचे की योनियों में जाता है। रजोगुणी वृत्ति प्रधान रहने पर इन्सान के चोले में आता है तथा सतोगुणी वृत्ति प्रधान होने से अवतार कहलाता है। वह दयाल पुरुष का अंश होता है। राम, कृष्ण आदि काल पुरुष के अवतार हैं। चोथे खण्ड का मालिक पारब्रह्म है। वहाँ पहुँच कर आत्मा वापिस नहीं आती। कर्मफल त्रिकुटी में समाप्त हो जाते हैं। वहाँ से निष्कर्म हो जाता है। यहाँ आकर मौज शामिल होती है। चूँकि यहाँ कोई इच्छा शेष नहीं रहती, संस्कार बनना बन्द हो जाते हैं, राज़ी-ब-रज़ा आ जाती है। उसके बाद दो-तीन जन्मों में संचित कर्मों को भी भोगकर आत्मा निज धाम में लौट जाती है, फिर वहाँ से दुनियाँ में नहीं लौटती।

Scanned by CamScanner

ऐसी आत्मायें निज इच्छा से आती और चली जाती हैं। इन पर कोई बन्धन या प्रतिबन्ध नहीं होता। किंचित कोई वासना रहती भी है तो वह छोटी छोटी घटनाओं के सामने आते ही एकदम वैराग पैदा कर देती है, उसे निज घर की याद आ जाती है और थोड़े प्रयास से वह निकल जाती है, जैसे सिद्धार्थ हुए जो बाद में गौतम बुद्ध के नाम से विख्यात हुए।

* * *

हमने जो कुछ भी हासिल किया वह गुरु पर विश्वास रख कर किया। जो कुछ उन्होंने कहा उसको मान लिया। कभी विपरीत विचार पैदा नहीं किया। गुरुदेव ने कहा कि "ईश्वर है, जितनी शक्ति मैं रखता हूँ उसके मुताबिक कह सकता हूँ कि ईश्वर अवश्य है।" हमने मान लिया। जब हमें स्वयं ईश्वर का अनुभव हो गया तब पूरा यक़ीन हो गया कि जो यह कहते हैं बिलकुल ठीक है।

* * *

हम खुदा ख्वाही व हम दुनियाये दूँ,
ई ख़यालस्तो महातस्तो जिनूँ।

भावार्थ—ईश्वर को भी पाना चाहता है और दुनियाँ को भी चाहता है, यह पागलपन नहीं तो और क्या है ?

* * *

आपके सत्संग में बल्कि, हरेक सत्संग में गुरु की बहुत महत्ता है। गुरु के निजी रूप का, ज्योतिमय स्वरूप का ध्यान किया जाता है। चाहे ध्यान में पहले स्थूल शरीर दीखता हो मगर वह नूरानी (प्रकाश रूप) है। अगर गुरु की तस्वीर का ध्यान करते हो तो यह तो मूर्ति पूजा हो गई। जिसका ध्यान करोगे वही मिलेगा। अगर तस्वीर या मूर्ति का ध्यान करते हो तो मरने के बाद वही

Scanned by CamScanner

मिलेगी। इज्ज़त के तौर पर घर में तस्वीर रख लेना और बात है। सामने बैठ कर भी जो ध्यान किया जाता है। वह उनके नूरानी रूप (प्रकाश रूप) का ध्यान किया जाता है। वह प्रकाश बराबर सूक्ष्म होता जाता है और आगे जाकर सतपुरुष से मिला देता है।

✲ ✲ ✲

हमारे गुरुदेव बहुत शान्त स्वभाव के थे और बहुत कम बोलते थे। उनके पास बैठने में ऐसा लगता था कि आनन्द का दरिया बह रहा है, आँख से आँख मिली नहीं कि धड़ाम से गिर पड़े। ऐसा लगता था कि शराब की बोतलें की बोतलें उँडेल दी हों। कभी उन्होंने अपने श्रीमुख से चरित्र निर्माण के लिए नहीं कहा। उनकी सत्संगति में बैठे बैठे ही उनकी कृपा से सब बुरी आदतें छूट गईं। यह फ़कीरी है। ऐसा महापुरुष मिल जाय तो उससे प्रेम पैदा करो।

✲ ✲ ✲

सन्त में अगर कोई बुराई देखते हो तो यह तुम्हारी अक्ल का दोष है।

✲ ✲ ✲

यह मार्ग प्रेम का है। अगर आपके दिल में गुरु का प्रेम है तो आप उससे प्रेम करेंगे और वह आपसे प्रेम करेगा। जब हालत ऐसी बन जाय कि उससे निरन्तर प्रेम की डोर लगी रहे और हर वक्त उसका ख़याल बना रहे तो दुनियाँ के ख़याल आते भी रहें तो उसका कोई हर्ज नहीं होगा। अगर ऐसा अभ्यासी गुरु के दर्शनों को न भी जाये तो भी कोई हर्ज नहीं है, लेकिन जिनको अभी ऐसा प्रेम पैदा नहीं हुआ है और फायदा उठाना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि तीन चार महीने में एक बार गुरु के पास आते रहें। कुछ वक्त भले ही लग जाये लेकिन फ़ायदा होगा।

Scanned by CamScanner

दो रास्ते हैं। एक को प्रवृत्ति मार्ग कहते हैं और दूसरे को निवृत्ति मार्ग। एक है अनुराग दूसरा है वैराग। एक स-कार है दूसरा न-कार है। निवृत्ति मार्ग में प्रत्येक वस्तु को नकार करते चलते हैं अर्थात कुछ नहीं है 'जगत मिथ्या है।' जिसको देखता है उसी में असारता पाता है, जिस चीज़ को पकड़ता है वही टूटी निकलती है। हर चीज़ में देखता है कि वह छूटने को है तब कहता है कि जगत मिथ्या है। जहाँ हर क्षण परिवर्तन हो रहा है वहाँ कौन सी चीज़ सदा रहने वाली है। जब यह सोच विचार विवेक बुद्धि द्वारा चित्त में बैठ जाता है तब वैराग पक्का हो जाता है। मुसलमानों में भी पहले 'ला इलाहा' (कुछ नहीं है सिवाय अल्लाह के) फिर आता है 'अल्लाह'। पहले दुनियाँ को नकार करके चलना पड़ता है। दूसरा अनुराग है जिसे सूफियों में 'असबात' कहते हैं और दूसरे शब्दों में इसे प्रवृत्ति मार्ग भी कहते हैं। यह स-कार है। जब तक मन की दुनियाँ का अन्त नहीं होगा, जब तक आप ईश्वर से मिलने के लिए तड़पेंगे नहीं तब तक इस रास्ते पर नहीं आयेंगे।

* * *

हमारा इष्ट क्या है ? जहाँ आनन्द ही आनन्द हो, ज्ञान ही ज्ञान हो और आज़ादी ही आज़ादी हो। जो इन तीनों का श्रोत है वही हमारा इष्ट है।

* * *

जब निरन्तर प्रेम से गुरु और शिष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो एक के विचार दूसरे के ऊपर आते हैं। गुरु रूप में परमात्मा आकर हमारी सहायता करता है। मगर शर्त यह है कि प्रेम सच्चा हो, कोई ग़रज़ न हो और अगर ग़रज़ भी हो तो प्रेम पाने की ख्वाहिश हो। गुरु का प्रेम ही ईश्वर प्रेम में बदल जाता है। हमें तो जो फायदा हुआ प्रेम से ही हुआ। हमारे गुरुदेव क्या थे ? जो कुछ थे वे ही जानते हैं। अगर खुदा कहूँ तो कुफ्र आयद होता

Scanned by CamScanner

है (नास्तिक कहलाता हूँ) उन्होंने हमसे कई बार कहा 'जो चाहो सो माँग लो' लेकिन हमने उनसे कुछ नहीं माँगा। हमें अगर कभी तकलीफ़ भी होती थी तो हम कभी खबर नहीं करते थे। वे खुद ही चले आते थे। अगर सच्चा प्रेम है तो ईश्वर खुद ही खिंचा चला आता है।

* * *

सन्तों की सौहबत पकड़ लो। जो वह कहते हैं उस रास्ते पर चलो। वह अगर मारते हैं, तो प्यार के कारण ऐसा करते हैं, तुम्हें सीधे रास्ते पर लाना चाहते हैं।

* * *

एक बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। कितना ही आप का अनुभव खुल जाय, अन्दर से कितने भी आदेश मिलें लेकिन शैतान बड़ा जबरदस्त है। वह कहीं भी धोखा दे सकता है। इस लिए अभ्यासी चाहे कितना भी ऊँचा हो और ख्याल से गुरु की कितनी भी नज़दीकी हो, उसे Physically (स्थूल रूप में) गुरु के दर्शन साल में दो तीन बार कर लेने चाहिए।

* * *

जब तक गुरु का सत्संग नहीं करेगा तब तक प्रीत नहीं पैदा होगी बिना प्रीत के प्रतीत यानी विश्वास नहीं पैदा होगा और बिना गुरु में विश्वास आये ईश्वर में विश्वास नहीं होगा। मगर प्रतीत आने के बाद भी अभ्यासी गिर जाते हैं। इसका कारण यह है कि माया बड़ी प्रबल है। उसने तमाम ब्रह्माण्डों पर पर्दा डाल रखा है, सबको भ्रमा रखा है। यह परमात्मा की बड़ी कृपा है कि वह मनुष्य को इसके जाल से निकाल देता है वरना आदमी की अपनी

Scanned by CamScanner

क्या ताकत है जो इसके जाल से निकल सके।

* * *

मालिक तेरी रज़ा रहे, और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरज़ू रहे॥

यही प्रवृत्ति मार्ग है, यही मुसलमानों का असवात है, यही Positive (स-कार) रास्ता है और यही सन्तों का प्रेम मार्ग है।

* * *

जब तक इन्द्रियों और बुद्धि के पर्दे शुद्ध नहीं हो जायेंगे तब तक आत्मा का प्रकाश नहीं झलकेगा। दिल के अन्दर दो बिन्दु काले हैं जो आत्मा का प्रकाश नहीं आने देते। जब उनकी सफाई हो कर हमारी सुरत आत्मा के पास जाती हैं तब असली आनन्द मिलता है। वैसा आनन्द हम दुनियाँ में नहीं पाते। अहिस्ता अहिस्ता दुनियाँ से नफ़रत होने लगती है। यहाँ अनुराग पहले है, और वैराग बाद में।

* * *

एक रास्ता बुद्धि का है और एक मन का है यानी एक त्याग का है और एक प्रेम का है। त्याग का रास्ता यह है कि हर चीज़ को देखते चलो कि किस चीज़ में कितना आनन्द है? एक दो बार देखकर नतीजा निकाल लो कि इसमें स्थायी आनन्द नहीं है तो फिर उसे छोड़ दो। दोस्तों को देखो, रिश्तेदारों और सगे सम्बन्धियों को देखो जहाँ तुम्हारा और उनका स्वार्थ टकरायेगा तो तुरन्त दोस्ती या रिश्तेदारी में फ़र्क आ जायेगा। सब मुँह मोड़ जायेंगे। इससे यह नतीजा निकालो कि दुनियाँ में सब ऐसे ही हैं। चावल का एक दाना देखा जाता है। दुनियाँ में जिस चीज़ में आनन्द क्षण भंगुर हो उसे त्याग कर दो। यह बुद्धि का मार्ग है।

Scanned by CamScanner

मगर इसका नतीजा तब तक कुछ नहीं है जब तक ईश्वर से प्रेम न हो। अस्थाई तौर पर कभी आत्मा का प्रकाश दिखाई देता है और कभी नहीं। चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई देता है लेकिन बादल आकर उसे ढक लेते हैं। इससे घबडाओ नहीं। कोशिश करते रहो, वक्त लगेगा, और एक न एक दिन कामयाबी होगी। यह Negative (नकारात्मक) तरीक़ा है।

दूसरा तरीका प्रेम का है। यह Positive (सकारात्मक है। सौभाग्य से अगर कोई सन्त मिल जाय तो उसकी सतसंगत में बैठ जाओ और अपने मन को देखो। बग़ैर उसकी तवज्जह किए हुए उसके अन्दर से आत्मा के प्रकाश की धारें निकलती रहती है जैसे हीरा कहीं भी रखा हो उसमें से प्रकाश की किरणें निकलती रहती हैं जिनके प्रभाव से मन की चंचलता और परेशानियाँ शान्त हो जाती हैं। अगर तुम्हें आनन्द की तलाश है तो वह असली सन्त के पास मिलेगा।

* * *

गुरु से रूठते कभी नहीं। गुरु का कोई काम दयालुता से ख़ाली नहीं होता।

* * *

जिस तरह चाँद की खिंचावट की वजह से समुद्र में ज्वार भाटा आ जाता है और उसका पानी सैकड़ों मीलों तक नदी में चला जाता है लेकिन समुद्र अपनी जगह पर मौजूद रहता है, इसी तरह वह आदि शक्ति नर देह में आ जाती है। इसी को अवतार, सन्त, औलिया, वग़ैरह कहते।

* * *

जो ईश्वर के बारे में जानना चाहता है और उसे पाना चाहता है, वही ईश्वर है। अन्तर केवल इतना है कि जिसको जानना चाहता है वह निर्लेय है और जो जानना चाहता है वह

Scanned by CamScanner

लिप्त है। जिन आवरणों में वह लिप्त है उन्हीं के कारण ईश्वर को या अपने आपको जानने और पाने में बाधा है। उसी बाधा के कारण जो ईश्वर अंश रूप में आवरणों (स्थूल देहादि) में बँधा हुआ है उसे 'ईश्वर' न कह कर 'आत्मा' की सज्ञा दी गई है।

* * *

वास्तव में जिस चीज़ का ज्ञान आप करना चाहते हैं, जिसे आप वास्तव में जानना चाहते हैं, वह है रूह यानी 'आत्मा'। उसके असली रूप में जितने ही आप उसके ज्ञान पाने की खोज में आगे बढ़ते जायेंगे उतनी ही आपकी आत्मा लिप्त से निर्लेप होने लगेगी और एक दिन वह आयेगा जब आप स्वयं ईश्वर हो जायेंगे।

* * *

यदि आपने दरअसल अपने गुरु में विश्वास कर लिया है और अपनी बुद्धि से उसकी बातों में तर्क नहीं करते तो वह आख़ीर तक आपको इस दुनियाँ से निकाल ले जायगा। लेकिन अगर मन और बुद्धि से उसको तौलते हो तो यह मन-मत होना आपकी मदद नहीं करेगा।

* * *

गुरु जो कुछ कहे उसे पत्थर की लकीर मान लो। उसके प्रेम के आगे दुनियाँ की हर चीज़ तो क्या, ईश्बर भी कुछ नहीं हो सकता।

* * *

सच्चे गुरु की मौहब्बत ही ईश्वर की सौहबत है।

* * *

पशुओं में ज्ञान शक्ति कम है या 'न' के बराबर है। उनकी तुलना में मनुष्य में ज्ञान-शक्ति बहुत अधिक है। मनुष्यों-मनुष्यों में भी ज्ञान शक्ति में फ़र्क़ है। जिसमें ज्ञान-शक्ति, चैतन्य-शक्ति अधिक है उतनी ही उसमें सत्-चित् आनन्द की मात्रा अधिक है।

Scanned by CamScanner

केवल उसके जागृत करने और विकास की आवश्यकता है।

जब आपको अपना ख्याल आता है तब आपको यह भी ख्याल होता है कि आपसे बड़ी हस्ती (शक्ति) भी कोई है। आप उस तक पहुँच नहीं पाते या उसे जानते नहीं हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप में वह चीज़ है ही नहीं। चीज़ तो है, परन्तु उस तक पहुंचने के लिये आपमें उत्साह और व्याकुलता नहीं है। इसी उत्साह और व्याकुलता का दूसरा नाम 'चेतना' है। जितनी ही आपकी चेतना विकसित होती जायगी उतनी ही असलियत मालूम होती जायगी। इसी को 'ज्ञान' कहते हैं।

✲ ✲ ✲

विना गुरु के ज्ञान नहीं होता। जो अनुभव गुरु अपनी खैंच शक्ति द्वारा कराता है उसे सूफी भाषा में 'कश्क कहते हैं। इसके विपरीत शिष्य गुरु का सहारा लेकर जो ज्ञान अपने अभ्यास द्वारा प्राप्त करता है उसे सूफ़ी भाषा में 'कस्ब कहते हैं। गुरु कितना ही ऊँचा हो सब को अपनी खैंच शक्ति से अनुभव नहीं करा सकता। गुरु और शिष्य दोनों में पूर्णता हो तभी ऐसा अनुभव होता है। गुरु की पूर्णता यह है कि वह आत्मज्ञानी हो और शिष्य की भलाई के सिवाय उसकी कोई और इच्छा न हो। शिष्य मौअद्धिब यानी पूरी तरह गुरु मुख हो, गुरु के आदेशों पर चलने वाला हो और सर्वस्व गुरु के आश्रित हो। उस में इतनी शक्ति हो कि वह आत्म-ज्ञान को कबूल कर सके। जब यह दोनों बातें होती हैं तब गुरु कृपा पूर्ण रूप से शिष्य पर उतरती है और तब कश्फ़ी ज्ञान (गुरु कृपा द्वारा अनुभव) होता है। यदि दोनों में से एक बात में भी कमी है तो कश्फ़ी ज्ञान असम्भव है। यह धोखा नहीं हैं। वजह सिर्फ यह है कि या तो हममें कमी है या आप में कबूल करने की शक्ति का अभाव है।

Scanned by CamScanner

रामाश्रम सत्संग के प्रकाशन

रामाश्रम सत्संग, सिकन्द्राबाद द्वारा प्रशाशित पुस्तकें

			रु० पै०
१.	फकीरों की सात मंजिलें (संत सप्त-दर्शन)		५-००
२.	अमृतरस		५-००
३.	महात्मा रामचन्द्रजी महाराज का जीवन-चरित्र	सादा	५-००
		सजिल्द	६-००
४.	भजन संग्रह		३-००
५.	Discourses on Hindu Spiritiual Culture by Param Sant A. K. Banerji (Parts 1, 2 & 3) (Bound)		३०-०० each
६.	गुरु शिष्य सम्वाद		५-००
७.	सन्तमत प्रवेशिका		४-००
८.	संत वचन (भाग १ से ५)	प्रत्येक	४-००
९.	मारफ़त की ग़ज़लें		३-००
१०.	नवनीत (भाग १ व २)	प्रत्येक	५-००
११.	घटमार्ग		५-००
१२	अभ्यास में मन न लगने के कारण और उपाय		५-००

मिलने का पता:—

(१) मैनेजर, राम सन्देश मासिक पत्रिका, रामाकृष्णा कालोनी, गाजियाबाद (उ० प्र०)

(२) डा० करतार सिंह, नेशनल होम्यो स्टोर्स, फतहपुरी, दिल्ली।

(३) डा० हरिकृष्ण भटनागर, कायस्थवाड़ा, सिकन्द्राबाद जिला बुलन्दशहर (उ० प्र०)

Scanned by CamScanner